

SHREE SOMNATH

The Glorious Symbol of
Bharatiya Unity



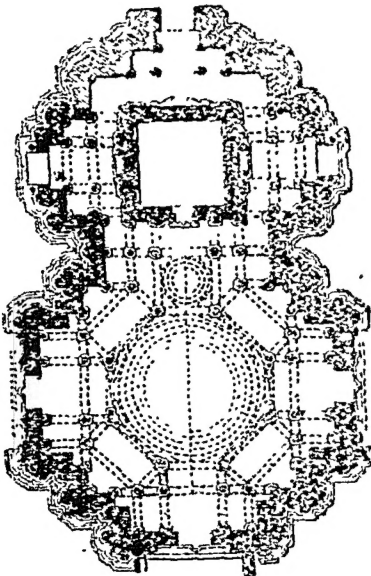
Ever since Ānarta was providentially directed to step over into, to colonize and to develop that vast stretch of land situated on the Western Sea which we now know as Saurāshtra, the Western sea-board of Saurāshtra has been a highly conjured place of great fascination for the pilgrims from over the main land beyond the Isthmus of Saurāshtra.

It was here, during that pre-historic period mystified deeper by the later myths woven by posterity, that Haryashva of Solar Line inherited the Kingdom of his father-in-Law Madhu of Lunar Line, at Giripur in Ānarta country whose one division was said to be Saurāshtra.

It was also here, in later times, that Lord Krishna the most illustrious scion of the Haryashva Dynasty (Harivansha) returned to his parental land and established a Yādava principality by founding Dwārkā on the margin of the Western Sea.

And it was even here, to put it in an historical way, that the mythical King Chandra, a distant fore-father of Shree Krishna propitiated God Shiva to countermand the curse of 'wasting disease' (*Kshaya-Roga*), and in resplendent commemoration of which event erected on the Western Sea a temple with adoring devotion and dedicated it to Lord Shiva as Shree Someshwara or Shree Somnāth.

Since that auspicious moment of Time, the Great Leveller, Somnāth has been in the fore-front of the twelve *Jyotir-Lingas* and has inspired so many of his devotees to 'Do and Die' for the Unity of Bhāratavarsha.



Ground Plan of Old Somnath

During the tumultuous times of the Muslim Rule Somnāth bore, for times over and over again, the brunt of their iconoclastic zeal and suffered heavily every time only to inspire and instil fresh urge and vigour to repel the invasions and to protect our Eternal Culture (*Sanātana Sanskriti*).

The tradition, as preserved in the Bhadrakālī Inscription of A. D. 1169 at Verāval, says that the Temple of Somnāth was first erected of gold by Chandra, of silver by Rāvana, of wood by Krishna, of big slabs of stone by Bhimdeva (1030 A.D.)

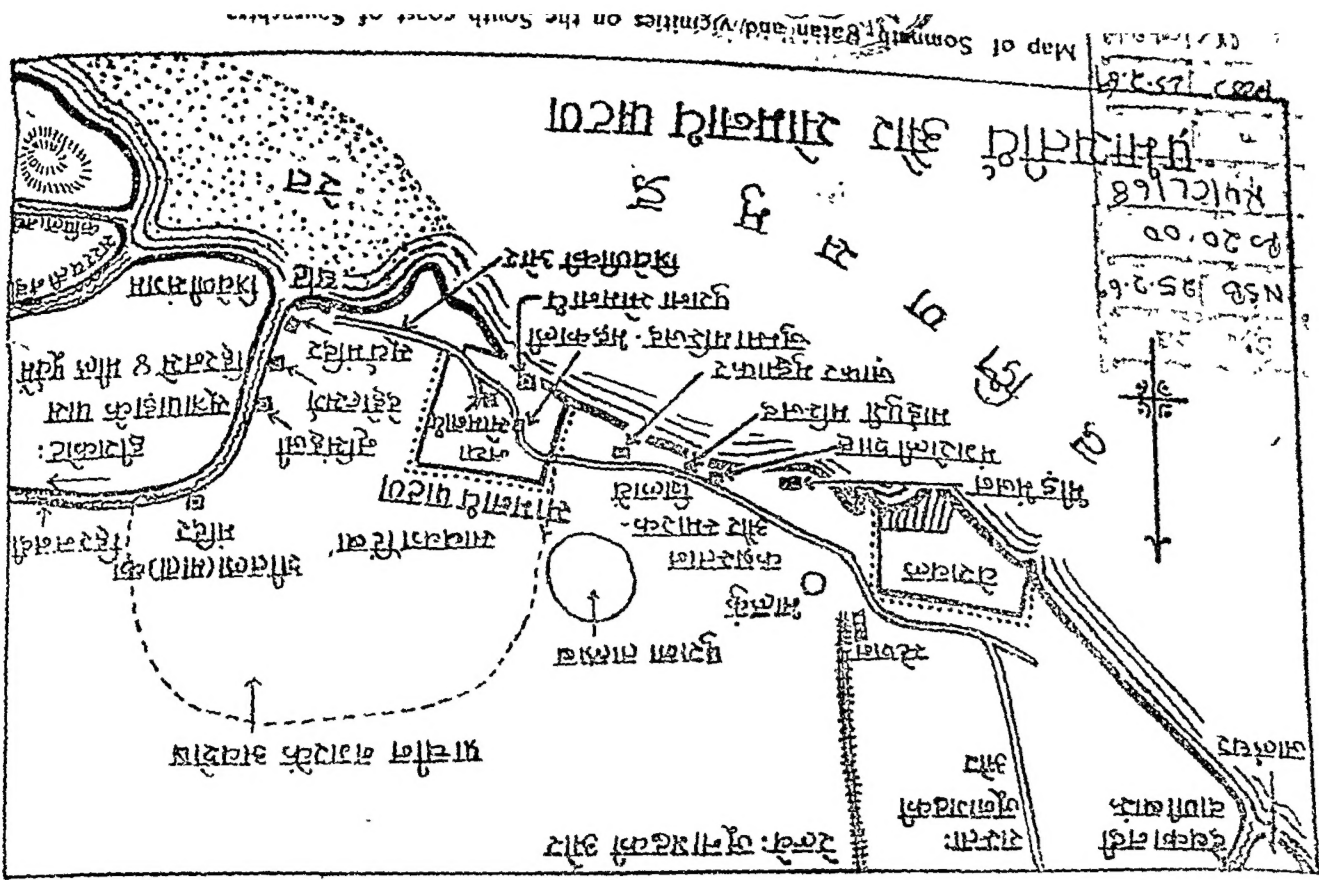
and of great beauty by Kumārpal(1169 A.D.).

The structural and architectural history of the Somnāth Temple has revealed a continuity of about 2,000 years of its existence at the very spot where it is now once again rising on the Western Sea in the time-honoured ancient Prabhās-Kshetra so reverentially celebrated in our Paurānic scriptures.

The sculptures, the plans, the courtyard pavements, the four holes one above the other in the northern wall of the sanctum showing the four water-outlets of four different periods, and other excavated material go to show that the temple has occupied the self-same site at least from the beginning of our era—say for the last two millenniums.

This album shows in a very impressive manner with the help of the sculptures and other material, how the Spirit of Somnāth has been kept up alive by his torch-bearers, and how, after every attempt at destruction, Somnāth has risen up, rejuvenated with more power and added vigour from the fallen debris like that fabulous bird Phoenix of Greek mythology which rose up every time invigorated from its own ashes.

And indeed now at last Shree Somnāth has proved to be the glorious symbol of Bhāratīya solidarity, as we all see here at Prabhās Patan today, Friday the 5th of Vaisākhya Bright Half of V. S. 2007, the 11th of May 1951 A.D., the memorable day of the Pratishthā of Shree Somnāth's Linga in His own world-famous Glorious House.



श्री सोमनाथ

भारतीय अैक्यका भव्य प्रतीक

ज वसे आनर्तके भाग्यमें यह बहा गया कि वह सौराष्ट्रमें अपना पाँव रखे और उसे अपना निस्तृत संस्थान बनाकर समृद्ध करे तत्रसे पश्चिमी समुद्र से सटा हुआ सौराष्ट्रका यह विशाल भूमिखण्ड समस्त भारतके यात्रियों के लिये एक गौरवपूर्ण तीर्थधाम बना हुआ है।

प्राचीन समयमें जिस प्रागैतिहासिक स्थान सम्बन्धी कभी रहस्यपूर्ण कथाओं पिछली पीढ़ी द्वारा रची गयी हैं. इन कथाओंसे मालूम होता है कि आनर्त देशके गिरिपुर प्रदेशका राज्य सूर्यवंशी हर्यश्च राजाको अपने श्वसुर चंद्रवंशी मधुराजासे विरासतमें प्राप्त हुआ था. इसी गिरिपुर प्रदेशका एक भाग यह सौराष्ट्र माना जाता है.

आगे चलकर, इसी स्थान पर हर्यश्च हरिवंशके विख्यात वंशज भगवान् श्री कृष्णने अपनी पैतृक भूमि पर आ कर पश्चिमी समुद्रके अंतिम छोर द्वारिका में यादवोंका राज्य स्थापित किया था.

ऐतिहासिक दृष्टिसे देखने पर मालूम होता है कि भगवान् श्री कृष्णके बहुत पहलेके पूर्वज पौराणिक राजा चंद्रने भगवान् शिवको क्षयरोग-शापनिवारणार्थ प्रसन्न किया और उसकी भव्य स्मृतिमें जिस पश्चिमी समुद्रके तट पर परम श्रद्धासे एक मंदिर बनवाया, और उसे भगवान् श्री सोमेश्वर-सोमनाथ-का अर्पित किया.

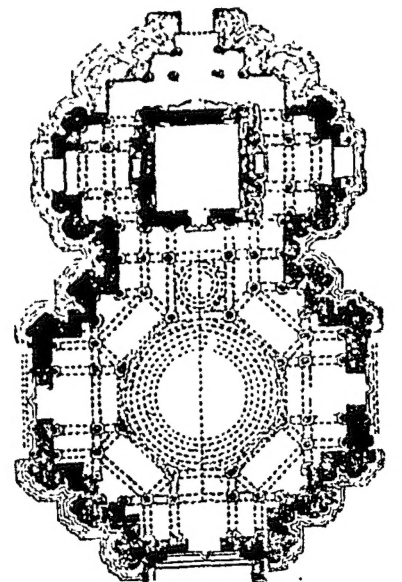
उसी धन्य क्षणसे 'महाकाल सोमनाथ' द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें प्रधान बन कर चहँ रहा रहे हैं, और अपने अनेक भक्तोंको भारतवर्षकी एकता के लिये 'करेंगे और मरेंगे'की प्रेरणा देते रहे हैं.

मुसलमानोंके तुफानी अमलमें सोमनाथने बार-बार मूर्ति तोड़नेवालोंके आक्रमण तथा नुकसान सहे हैं, और साथ ही साथ ऐसे आक्रमणकारियोंका मुकाबला करनेके लिये तथा सनातन संस्कृतिकी रक्षाके लिये प्रजाको नया बल तथा आशाकी प्रेरणा दी है.

वेरावलके भद्रकालीके मंदिरमें सुरक्षित आ. स. ११६९के शिलालेखसे पता चलता है कि सोमनाथका मंदिर पहले चंद्रने सुवर्णका, रावणने चांदीका, कृष्णने लकड़ी का तथा आ. स. १०३०में भीमदेवने प्रस्तरखण्डोंसे निर्माण किया था। जिस मंदिरको आ. स. ११६९में कुमारपालने परम सुशोभित किया था.

मंदिरके स्थापत्यके अतिहाससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पिछले दो हजार वर्षोंसे यह मंदिर उसी स्थान पर स्थित है, जिस स्थान पर आज पुनः उसका पुनरुद्धार हो रहा है. यह स्थान वही है कि जो पश्चिमी समुद्रके तट पर अनादि कालसे पवित्र प्रभासक्षेत्रके रूपमें माना जाता रहा है.

स्थापत्य, रचना तथा सभागृह की कृश, अवम् निजमंदिरकी अन्तरी दीवारमें एकदूसरेके ऊपर आये हुअे भिन्न-भिन्न युगोंमें



पुराना सोमनाथ की तलका आलेखन

and of great beauty by Kumārpal(1169 A.D.).

The structural and architectural history of the Somnāth Temple has revealed a continuity of about 2,000 years of its existence at the very spot where it is now once again rising on the Western Sea in the time-honoured ancient Prabhās-Kshetra so reverentially celebrated in our Purānic scriptures.

The sculptures, the plans, the courtyard pavements, the four holes one above the other in the northern wall of the sanctum showing the four water-outlets of four different periods, and other excavated material go to show that the temple has occupied the self-same site at least from the beginning of our era—say for the last two millenniums.

This album shows in a very impressive manner with the help of the sculptures and other material, how the Spirit of Somnāth has been kept up alive by his torch-bearers, and how, after every attempt at destruction, Somnāth has risen up, rejuvenated with more power and added vigour from the fallen debris like that fabulous bird Phoenix of Greek mythology which rose up every time invigorated from its own ashes.

And indeed now at last Shree Somnāth has proved to be the glorious symbol of Bharatiya solidarity, as we all see here at Prabhās Patan today, Friday the 5th of Vaishākh Bright Half of V. S. 2007, the 11th of May 1951 A.D., the memorable day of the Pratishthā of Shree Somnāth's Linga in His own world-famous Glorious House.



श्री सोमनाथ

भारतीय अैक्यका भव्य प्रतीक

ज

जैसे आनर्तके भाग्यमें यह बहा गया कि वह सौराष्ट्रमें अपना पाँव रखे और उसे अपना विस्तृत संस्थान बनाकर समृद्ध करे तबसे पश्चिमी समुद्र से सटा हुआ सौराष्ट्रका यह विशाल भूमिखण्ड समस्त भारतके यात्रियों के लिये एक गौरवपूर्ण तीर्थधाम बना हुआ है।

प्राचीन समयमें इस प्रागैतिहासिक स्थान सम्बन्धी कभी रहस्यपूर्ण कथाओं पिछली पीढ़ी द्वारा रची गयी हैं। इन कथाओंसे मालूम होता है कि आनर्त देशके गिरिपुर प्रदेशका राज्य सूर्यवंशी हर्यश्च राजाको अपने श्वसुर चंद्रवंशी मधुराजासे विरासतमें प्राप्त हुआ था। इसी गिरिपुर प्रदेशका एक भाग यह सौराष्ट्र माना जाता है।

आगे चलकर, इसी स्थान पर हर्यश्च हरिवंशके विख्यात वंशज भगवान् श्री कृष्णने अपनी पैतृक भूमि पर आ कर पश्चिमी समुद्रके अंतिम छोर द्वारिका में यादवोंका राज्य स्थापित किया था।

ऐतिहासिक दृष्टिसे देखने पर मालूम होता है कि भगवान् श्री कृष्णके बहुत पहलेके पूर्वज पौराणिक राजा चंद्रने भगवान् शिवके क्षयरोग-शापनिवारणार्थ प्रसन्न किया और उसकी भव्य स्मृतिमें इस पश्चिमी समुद्रके तट पर परम श्रद्धासे एक मंदिर बनवाया, और उसे भगवान् श्री सोमेश्वर-सोमनाथ-को अर्पित किया।

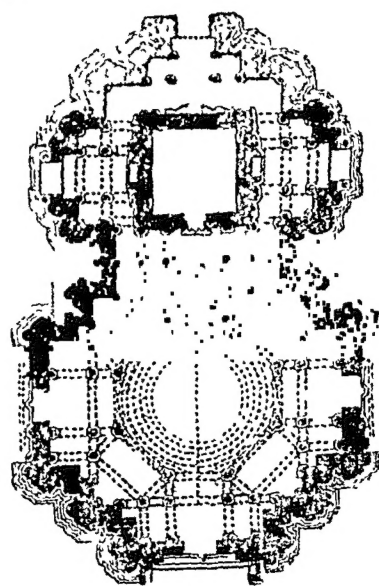
उसी धन्य क्षणसे 'महाकाल सोमनाथ' द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें प्रधान बन कर यहाँ रह रहे हैं, और अपने अनेक भक्तोंको भारतवर्षकी एकता के लिये 'करेंगे और मरेंगे'की प्रेरणा देते रहे हैं।

मुसलमानोंके तुफानी अमलमें सोमनाथने बार-बार मूर्ति तोड़नेवालोंके आक्रमण तथा नुकसान सहे हैं, और साथ ही साथ ऐसे आक्रमणकारियोंका मुकाबला करनेके लिये तथा सनातन संस्कृतिकी रक्षाके लिये प्रजाको नया बल तथा आशाकी प्रेरणा दी है।

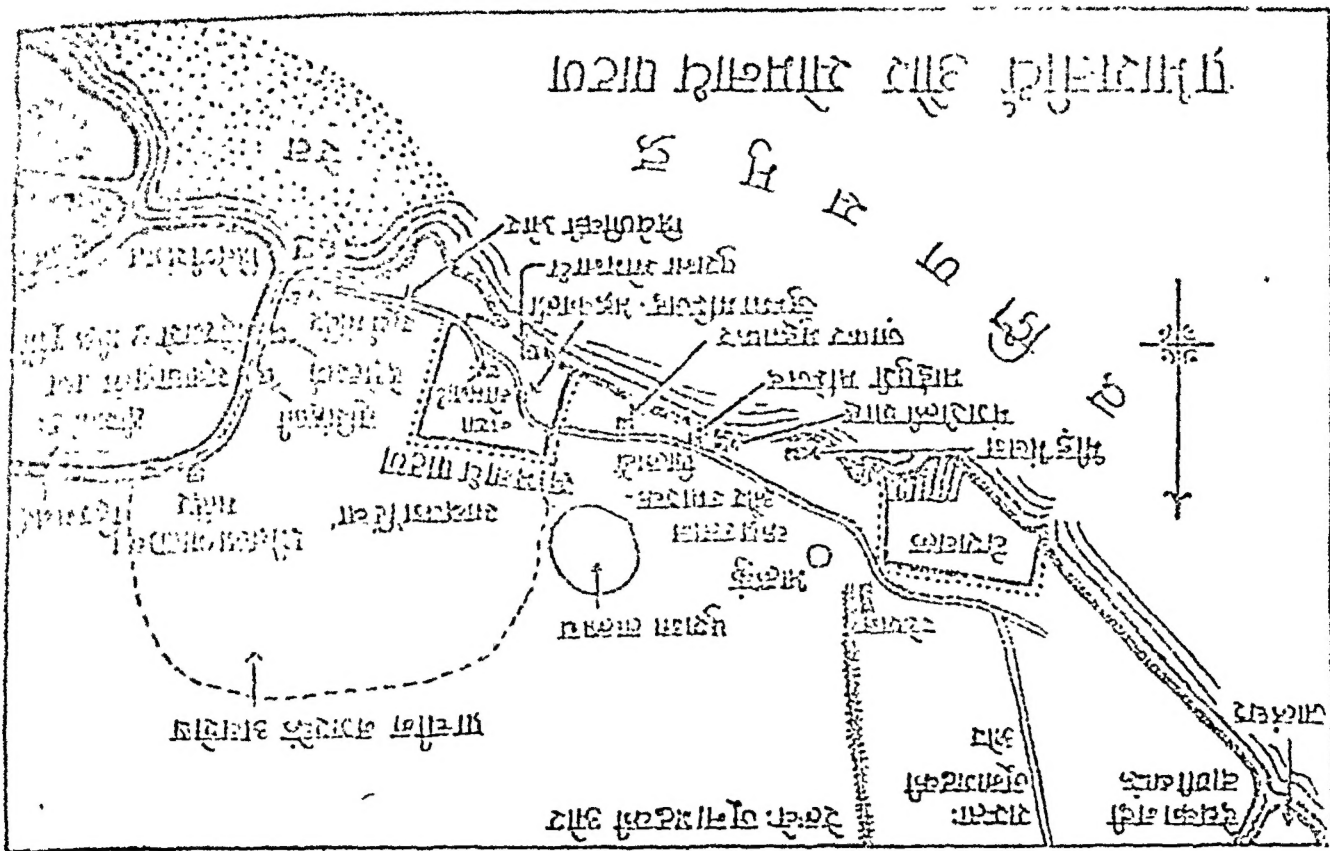
वेरावलके भद्रकालीके मंदिरमें सुरक्षित जी. स. ११६९के शिलालेखसे पता चलता है कि सोमनाथका मंदिर पहले चंद्रने सुवर्णका, रावणने चांदीका, कृष्णने लकड़ी का तथा जी. स. १०३०में भीमदेवने प्रस्तरखण्डोंसे निर्माण किया था। इस मंदिरको जी. स. ११६९में कुमारपालने परम सुशोभित किया था।

मंदिरके स्थापत्यके इतिहाससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पिछले दो हजार वर्षोंसे यह मंदिर उसी स्थान पर स्थित है, जिस स्थान पर आज पुनः उसका पुनरुद्धार हो रहा है। यह स्थान वही है कि जो पश्चिमी समुद्रके तट पर अनादि कालसे पवित्र प्रभासक्षेत्रके रूपमें माना जाता रहा है।

स्थापत्य, रचना तथा सभागृह की फ़र्श, अवम् निजमंदिरकी उत्तरी दीवारमें एकदूसरेके ऊपर आये हुअे भिन्न-भिन्न युगोंमें



पुराना सोमनाथ की तलका आलेखन



विश्वविख्यात धर्म-धारा-में देख रहे हैं।

शुक्रवार, ११ मई १९५१ अ. के समुदाय दिवसके, श्री सोमनाथ जिला की प्रतिष्ठा अपने ही सौभाग्य है कि इस बड़ी प्राणप्रसिद्ध प्रवास-पटल क्षेत्रमें आज, वैशाख शुक्ल ५मी, २००७ वि. समुच्च श्री सोमनाथ भारतीय संगठन के एक अन्य प्रतीकके रूप में सिद्ध हुआ है। हमारा पक्षीकी तरह, अपनी ही भूमिसे शक्तिको कैसे विविध रूपसे आगे बढ़ाया। हर प्रयत्नके बाद सोमनाथ कैसे उठ खड़े हुए, तथा और जीव खड़े हुए, श्रीक प्रौद्योगिक फीनिक्स है कि सोमनाथकी प्रौद्योगिकी इसके व्यतिथिसे आज तक कैसे जीवित रहा और विनाशके यह विनाशकी स्थापत्य तथा अन्य पदार्थकी सहायतासे प्रसाधनपादक रूपसे स्पष्ट बना रही जिस युगके प्रारंभसे ही, अर्थात् दो हजार वर्षोंसे, किसी स्थान पर स्थित है।

CONTENTS

समावेश

५

Somnath Temple : South (1920 A.D.)	सोमनाथ मंदिर : दक्षिण (१९२० आ.स्वी.)
Sculpture : Entrance : East	शिल्प : प्रवेशद्वार : पूर्व
Sculpture : South	शिल्प : दक्षिण
Sculpture : North	शिल्प : उत्तर
Smaller Temple : West	छोटा मंदिर : पश्चिम
Arches : Hindu and Muslim	कमान : हिन्दु एवं मुस्लिम शैली
Elephants, Horses, Men & Gods : North	गजथर, अश्वथर, नरथर, देवथर : उत्तर
Sculpture in Pillars	स्तंभशिल्प
Three Outlets : Sanctum : North	तीन जलमार्ग : गर्भगृह : उत्तर
Panel of Gods : South	देवथर : दक्षिण
Nataraja : South	नटराज : दक्षिण
Yogi & Male Sculpture	योगी और देवनृत्य
Platform Sculpture : Vaman	वामनावतार
Detail of Sculpture	गजथर
Platform Moulding	पुराना शिल्पावशेष
Nataraja	नटराज
Torana Piece	तोरण
Portico Parapet : East	नृत्यमंडप कक्षासन : पूर्व
Shiva as Kirat	शिव : किरातस्वरूप
Shree Krishna's Crematorium	देहोत्सर्गतीर्थ

॥ ५ ॥



॥ ५ ॥

राष्ट्रपति का संदेश

अवसर : सोमनाथ की यात्रा

स्थल : सोमनाथ मंदिर

दिनांक २८-९-५९ (सोमवार)

महामहिम जामसाहेब, पु. पूजारियों,
देवियों और सज्जनों !

प्रायः आठ वर्षों के बाद मुझे एक बार और सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैं यहाँ आकर दर्शन कर सका। यह स्थान अनंत काल से तीर्थस्थान रहा है, और बावजूद इसके कि इस पर समय समय पर विपत्तियाँ आती गई, यह हमेशे पुनर्जीवित होता रहा और अपने गौरव को आज तक हमेशे बनाये रहा। और यह लोगों के लिये बड़ा गौरव का विषय है कि स्वर्गीय सरदार वल्लभभाई और महामहिम जामसाहेब के अध्यक्षता में इस स्थान का एक प्रकार से फिर से पुनर्जीवन किया गया है। मुझे यह आशा है कि यह कीर्ति उस तरह से अनंत काल तक चलती रहेगी जिस तरह से कि इस स्थान की कीर्ति और महत्ता आज तक वर्तमान रही है। यहाँ आकर केवल एक ही साथ रहनी चाहिये और वह यह कि ईश्वर के पग में प्रेम हो और यहाँ से यह आशीष मिले कि हम अपने जीवन को सफल बना सकें ! यही प्रार्थना है, यही वंदना है, और इन शब्दों के साथ मैं एक बार फिर नमस्कार करता हूँ।

સોમનાથની આગેવાની

પ્રકાશક :

શ્રી. મ. ડી. પ્રેમાણી

સોમનાથ રૂ. ૨૨ વળી

રાજમહેલ, ભરૂચ

ક્રિષ્ણ : ૭૫ નવે પૃષ્ઠે



: વિશ્વરત :

હિંમતીય મહારાજ ભરૂચ

શ્રી. દિગ્વિજયસિંહજી, નવાનગર—સાબરમતી

શ્રી. ડી. આ. સુનર

શ્રી. ન. વિ. ગાંધીજી

સોમનાથ

ભરૂચ

શ્રી. ધી. એમ. ભરૂચ

શ્રી. રી. આર. રાજ

શ્રી. દયાશંકર ડી. દેવે



મંદિરનો ઉદ્ગમ

યત્ર ગંગા ચ યમુના યત્ર પ્રાચી સરસ્વતી ।
યત્ર સોમેશ્વરો દેવસ્તત્ર મામમૂતં કૃતં કૃષીન્દ્રાયેન્દ્રો પરિસ્ત્રવ ॥

“જ્યાં ગંગા, યમુના અને પ્રાચી સરસ્વતી—એ નદીઓનો ત્રિવેણીસંગમ થાય છે અને જ્યાં સોમનાથ પ્રભુ વિરાજે છે ત્યાં મને અમૃતત્વ અર્પો. હે સોમ ! હિન્દને માટે અમૃત વરસાવો.”

(ઋગ્વેદ, ખિલ)

સૌરાષ્ટ્રના દક્ષિણકાંઠે પ્રભાસપાટણમાં આવેલું સોમનાથ પ્રભુનું મંદિર

અનુશ્રુતિ પ્રમાણે સ્થિતીની ઉત્પત્તિ જોડતું જ પુરાણું છે. ઉપર આપેલા ઋગ્વેદના અવતરણથી તદ્દન સ્પષ્ટ બચાવ આવે છે કે વૈદિક સમયમાં આ પવિત્ર ધામ ઘણું જ જાણીતું હતું. મહાભારતના કાળમાં પરંપરા પ્રમાણે, પ્રભાસ તીર્થક્ષેત્ર હતું. ઔત્કાલિક દક્ષિણે જોતાં ૫૦૦૦ વરસ પહેલાં સિંધુની ખીણમાં મહાદેવ પ્રભુ પૂજાતા માલમ પડે છે.

પુરાણમાં હજીકત આમ છે : દક્ષ પ્રજાપતિને ૨૭ કન્યાઓ હતી, અને તે બધીને ચંદ્રદેવ-સોમને પરણાવી હતી. આ બધીમાં રોહિણી સૌથી વધારે રૂપાળી હતી અને તેથી સોમનો તેના તરફ પ્રક્ષપાત હતો. સ્વાભાવિક રીતે તેની બીજ સ્ત્રીઓ (સપત્નીઓ) એ—જે કે તે બધી બહિનો, જ હતી—જોતાના પિતા દક્ષને ફરિયાદ કરી અને તેમણે જોતાની બધીય કન્યાઓ પ્રયે સરખો વર્તવ રાખવા સોમને યુક્તિપ્રયુક્તિથી સમજાવ્યો. થોડા સમય પછી વળી સોમને રોહિણીનું આકર્ષણ દુર્નિવાર થઈ પડ્યું અને તે તેનામાં જ કેવળ મસ્ત રહ્યા લાગ્યો. તેની બીજ સ્ત્રીઓએ ફરીથી જોતાના પિતાને ફરિયાદ કરી અને તેણે જો જોતાનું વલણ ન બદલે તો શાપ આપવાની

ધમકી આપી. સોમે આ ધમકીને ગણકારી નહીં એટલે દક્ષે તેને શાપ આપ્યો, “તારો ક્ષય થશે.”

પરિણામે ચંદ્રદેવ-સોમ દિવસે દિવસે ક્ષય પામતો ગયો. રોગપ્રક્રાંત થવાના પ્રયત્નોમાં તેણે યસો, ડ્યાં પણ તે નિષેધ નીવડ્યા. તેનો તો ક્ષય થતો જ ગયો. ઔપધિઓ સ્વાદરહિત બની; વનસ્પતિ ઊગવા અસમર્થ નીવડી. દેવો ત્રાસી ઊઠ્યા. સોમનું શાપનિવારણ કરવા દક્ષને તેઓ કાલાવાલા કરવા લાગ્યા. અને આ શરતોએ તેમણે તેમ કરવા સ્વીકાર્યું : “સોમે જોતાની બધી પત્નીઓ સાથે સરખો વર્તવ રાખવો જોઈએ, પ્રભાસતીર્થ આગળ જ્યાં સરસ્વતી નદી સાગરને મળે છે તેમાં સ્નાન કરવું જોઈએ, અને ત્યાં મહાદેવની સ્તુતિ કરવી; જે તે આ પ્રમાણે કરે તો માસના એક પક્ષમાં તે રોજરોજ ક્ષય પામતો જય પરંતુ બીજ પક્ષમાં રોજરોજ વૃદ્ધિ પામતો જાય.” અંતે દક્ષે સ્ત્રીઓની અને બ્રાહ્મણોની ઉપેક્ષા ન કરવાનું કહ્યું.

દક્ષની સલાહ મુજબ સોમ રોહિણી સહિત મરદીના હિંડના આકારના સોમનાથના આ સ્પર્શસ્થાનની અર્ચના માટે નીચે પ્રભાસ ઉતરી આવ્યો.



૪૦૦૦ વરસની સોમની તપશ્ચર્યા પછી શિવ ભગવાન તેના પર પ્રસન્ન થયા. તેના ઉપર કૃપા કરી અને તેને શુક્લ પક્ષમાં વર્ધિ પામવાનું અને પ્રકાશવાનું સામર્થ્ય બક્ષ્યું. આ સ્થળે સોમે પોતાનો ભાસ (પ્રકાશ) પુનઃ પ્રાપ્ત કર્યો એટલે આ જગા પ્રભાસ નામે ઓળખાઈ.

અત્રાગ્રે પોતે સોમ અને તેની વહાલસિંચી પ્રિયતમા રેાહિણિને સોમનાથના મંદિરની સ્થાપના માટે પ્રેરણા આપી. અત્રાગ્રે પૃથ્વીને ભેદી અને સૌગ્રે મરણીના ઈંડાના કંદનું શિવનું ઝળહળતું સ્વયંભૂ સ્પર્શલિંગ જોયું. એ મધ્ય અને દક્ષાકુદરોથી છવાયેલું હતું. એના પર અત્રાશિલા મૂકવામાં આવી હતી; અને એનીય ઉપર સાક્ષાત અત્રાગ્રે સોમનાથ પ્રભુના મોટા લિંગની સ્થાપના કરી હતી. પછીથી વૈદિક મંત્રો વડે તેની અર્ચના થઈ હતી.

સ્કન્દ પુરાણના પ્રભાસ ખંડ (૨-૮૨ અને ૮૩) માં સોમનાથ લિંગનું આ પ્રમાણે વર્ણન છે : “સ્વર્ગમંડળની પ્રભા જેવું દેહીઅમાન તે મહાશક્તિનું સ્વયંભૂ લિંગ છે, સ્પર્થી વીટળાયેલું છે, મરણીના ઈંડા જેવડે એનું કંદ છે, સ્પર્શલિંગ એ કુદ્રવાય છે અને ભૂભાગમાં રહેલું છે.”

ભારત યુક્તના દિવસોમાં પશ્ચિમ કાંઠે પ્રભાસ બધાં સ્થળોમાં સૌથી વધારે પવિત્ર હતું. અષિઓ-મુનિઓ પણ ત્યાં એકઠાં મળતાં. ઇંદ્ર અને સ્વર્ગ-એ એ દેવાનું માનીતું ધામ હતું. બધાં પાપનિવારણ કરવાનો એનો ગુણધર્મ હતું; પ્રભાસનું

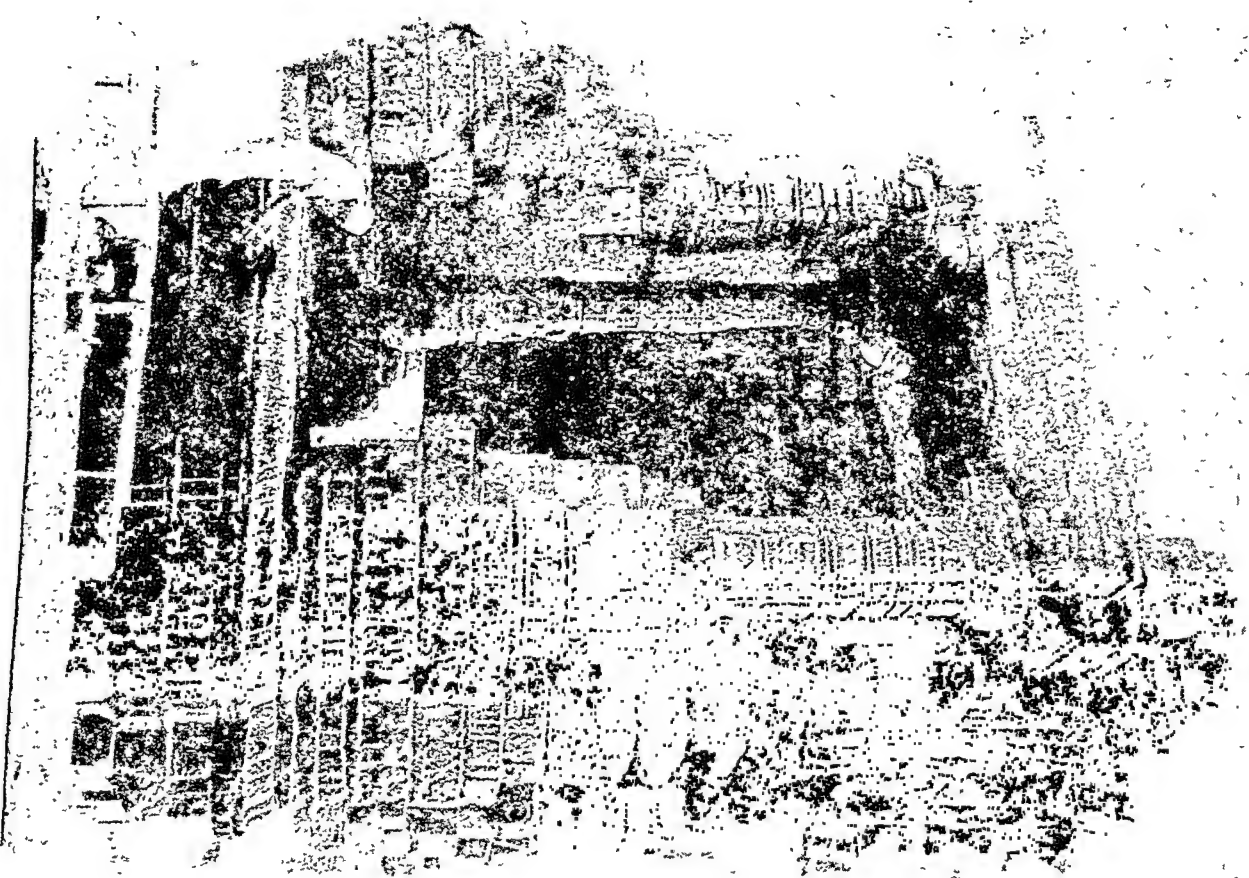
મુદ્રસ્તાન વ્યક્તિને સ્વર્ગે લઇ જનારું હતું. પાંડવે આ પવિત્ર ધામે આવ્યા ના અને તેમણે તપશ્ચર્યા કરી હતી. શ્રીકૃષ્ણ અને યજ્ઞરામે એમ જ કશું હતું; રક્ષા જતાં રસ્તામાં ગોડણીથી અર્જુન અહીં આવ્યો હતો. જન્મેજય રીક્ષિતરાય પણ અહીં આવી ગયા હતા; શ્રીકૃષ્ણ યાદવોને સૌરાષ્ટ્ર લઈ આવ્યા તે પહેલાં થણા સમયથી પ્રભાસ આખાય દેશમાંથી યાત્રાળુઓને ઘાડપરું પવિત્ર સ્થળ બન્યું હતું.

ત્યાં સ્થાન કરીને અને મંદિરમાં શિવની આરાધના કરીને સોમે પાતે સના-શાખમાંથી મુક્તિ મેળવી હતી એ હકીકતમાંથી, ત્યારે પણ આ સ્થળનું ાહારન્ય હતું એમ જાનુમાન ઉપકલ્પ થાય છે. તેથી પ્રભાસના દેવતાની વિચનાનો તે સમયે પણ અંગીકાર થયેલો હતો.

પૂજાવિધિ

ગ્રાજીતિલાંસિઃ કાળથી અને અત્યારે પણ શિવ અને ઝોની સતી મૂળ સ્વરૂપ છે. કાંથી પહેલાંનું શૈવસાહિત્ય યોગથી જ માત્ર નહીં પણ જનક અને મંત્રશક્તિથી પણ જોવાયેલું છે. પ્રભાસ મહાશિવયોગીઓનું કેન્દ્ર હતું, અને પુરાણોમાં ઉલ્લેખ છે એવા કેટલાક મોટા અપ્રિસુતિઓ. ઝોમની પવિત્ર વિદ્યા—સોમવિદ્યાના મહારથીઓ હતા. સોમ શિવની સાથે બહુ ધારી સંબંધ વસાવતા માત્રમ પડે છે, અને તે એટલે સુધી કે ઝોમનાં અનેક નામોમાં એ (સોમ) પણ એક અભિધાન આપવામાં આવ્યું છે. સોમવિદ્યા પ્રમાણે અમાસ શિવને પવિત્ર છે અને તેમની પૂજા માટે થણી જ અનુકૂળ ગણાય છે; તે દિવસે આવરેલું કાંઈ પણ ધાર્મિક કાર્ય અનેક ગણાં પુણ્ય આપણાનું મનાય છે.

તે પ્રભાસને કાંથી વધુ ધાર્મિક ગૌરવ અર્પે છે તે આ પાંચ ગુણધર્મો દેવદ્યુતિ, વર્ણવે છે: “સરસ્વતી, નદી, સમુદ્ર, અસ્તવંદ્ર અને સોમનાથ દેવો: દર્શન.” સોમવતી આમાવાસ્યાએ પ્રભાસની યાત્રા કરવી, ઉપવાસ કરવો, સરસ્વતીના સાગર સાથેના સંગમમાં સ્નાન કરવું અને સોમનાથનાં દર્શન કરવાં—આ બધું અગણિત ધાર્મિક યજ્ઞોનું પુણ્ય આપે છે.



જૂના મંદિરમાંના 'મહાક્ષિણા માર્ગ'ની અંદરનાં ગાંધી યાત્રી

લકુલીશ

સ્કન્દપુરાણ પ્રમાણે પાશુપત સંપ્રદાયના આઠાણિ સોમનાથના મંદિરના પૂજાવિધિ ધર્મ કરતા. સંપ્રદાયનો સ્થાપક લકુલીશ ઇ. સ. ના બીજા સૈકામાં થઈ ગયો. નર્મદાને કાંઠે કારવણ ગામમાં તે જન્મ્યો હતો, પ્રભાસ આવ્યો હતો અને તેણે પાશુપત દર્શનનો યોધ કર્યો હતો. પ્રભાસમાં લકુલીશની પ્રતિમાનું સ્થાપન કરવામાં આવ્યું હતું. પાશુપત સૂત્રો ૧૬૮ ની સંખ્યામાં છે, અને સચોળત, વામદેવ, અધોર, તત્પરુષ તથા હશાન એમ પાંચ ભાગમાં છે. સૂત્રો મહાદેવની પૂજા અને એવું સાધુજ્ય સેળવવાનું શીખવે છે. તૈત્તીર્ય આરણ્યકના દસમા અધ્યાય પર આ પદ્ધતિ આધાર રાખે છે.

લકુલીશ શિવનો અવતાર મનાય છે, અને જે કાંતકી પ્રાણિમંત્રે એની પ્રતિમાને અભિવંદન કરે છે તે સાત જન્મ સુધી અપ્પટ સમૃદ્ધિ પ્રાપ્ત કરે છે, અને દેવોના કૃપાપાત્ર બને છે.

તત્ત્વેવ પૂર્વદિશાગે લકુલીશસ્તુ મૂર્તિમાન ।
સ્વયં તિષ્ઠતિ દેવેષિ કૃત્વા ઘોરં તપઃ પુરા ॥
સંસ્થિતઃ પાપશામને તત્ર સ્થાને તલોપરિ ।
કાર્તિકયાં કૃત્તિકાયોગે યત્તં પૂજયતે નરઃ ॥
સ પૂજયતે મહાદેવિ સર્વેરપિ સુરાસુરૈઃ ॥ (સ્કં. ૫.)

★

દેહોત્સર્ગ

હસ્તિનાપુરની ગાદીએ યુધિષ્ઠિરને સ્થાપીને શ્રીકૃષ્ણ દ્વારકા પાછા પધાર્યા. યુધિષ્ઠિરે આદેશ આપ્યો કે યજ્ઞમાં હાજરી આપવા તેઓ દ્વરીથી હસ્તિનાપુર આવ્યા હતા. તેઓ દ્વારકા પાછા આવ્યા અને હવે શેષજીવન સુખેથી ગાળવા લાગ્યા. એક વખત ઉત્સવ અર્થે યાદવો પ્રભાસ ગયા. ત્યાં નિર્બાધ રીતે તેઓએ દારૂ લીધો અને પછી પરસ્પર વિનાશક એવા ઘોર સંગ્રામમાં પડ્યા. અંદર અંદર કપાઈ મૂક્યા. તેના પરિણામે આખી રી યાદવ જાતિ વિનાશ પામી; માત્ર શ્રીકૃષ્ણ, એમના ભાઈ બળરામ અને બીજા એ દારૂક અને બધું-બોદવા જ એમાંથી ઉગ્યા.

પછીથી આ સમાચાર આપવા તેમ જ યદુવંશની સ્ત્રીઓ અને એના બાળકોના રક્ષણાર્થે દ્વારકા આવવાના સંદેશ સાથે પોતાના સારથિ દારૂકને શ્રીકૃષ્ણે હસ્તિનાપુર મોકલ્યો. પછીથી તેમણે બનાથ સ્ત્રીઓ અને બાળકોને આશ્વાસન આપ્યું; દ્વારકા સાગરમાં વિદીન થઈ જશે એ અભિમાન તેઓ પહોંચેથી પામી ગયા હતા એટલે સૌ અજુનની



સોમનાથનાં દિલ્લા પર આક્રમણ કર્યું ત્યારે તે માંડલિકના તાબામાં હતો. રક્ષપાલો. અપૂર્વ વીરતાથી લડ્યા. ઝોંક સમયે તો તુર્કોનું સૈન્ય નગરમાં પ્રવેશ્યું હતું તેને પણ રાત પડતાં પછેલાં તો તેમણે હાંડી કાઢ્યું. ૮ મીએ ખુનખાર જંગ ખેલાયો; ૫૦,૦૦૦ ભારતીય વીર યોદ્ધાઓએ પ્રાણપ્રિય મંદિરના રક્ષણ માટે પોતાના પ્રાણ પાથરી દીધા. મહંમદે દિલ્લા હસ્તગત કર્યો, તે દવાલયમાં પ્રવેશ્યો, સદીઓની ભક્તિથી પૂત થયેલા દિવાની દુકા કરી નાખ્યા, દેવાલય ક્ષેત્રે અને બાળી ભસ્મીભૂત કરી નાખ્યું. સુંદર નાનકડા ચક્રમકના દાણાની છાંંદવાળું ભૂખરિયા પથ્થરવાળું ત્રીજું દેવાલય ધૂળ ચાટતું થઈ ગયું.

★

ચોથું અને પાંચમું દેવાલય

ઈ. સ. ૯૯૫ અને ૧૦૭૫ વચ્ચે આણંદીલવાડ પાટણના ચાલુક્ય રાજાઓ બહુજ ઝડપથી ઊંચા પદરથાને આરોહણ કરતા જતા હતા, અને તેમણે નવસારી તાલુકા સાથે લાટ (દક્ષિણ ગુજરાત) તો પ્રદેશ નેહી દીધો. લગભગ આ સમયે ગુરજરભૂમિ રાજા અધ્ધિનિઃ ગુજરાત માટે વપરાવા લાગ્યો. સોમનાથનું દેવાલય (ચોથું દેવાલય) આ સમય સુધીમાં બંધાઈ ચૂક્યું હોવુંજ નેહીએ. ભારતના સુનાકાલી યુધ્ધા આરબ સુસાક્ષરો સોમનાથ પાટણની અગત્ય અને પવિત્રતાથી મુગ્ધ થતા હતા. અલેખેરની એની અગત્ય વિશેની સાક્ષ પૂરે છે. ૧૧ મી સદીના મધ્યમાં આવેલા ઝેન-અલ-અખખારે જણાવ્યું છે “હિંદુસ્તાનમાં સમુદ્રને કાઢે સોમનાથનું મોટું નગર છે : જેમ સુન્દરિમોનું મક્કા તેમ હિંદુઓનું એ પવિત્ર ધામ છે.”

સોમનાથ પાટણ કે દેવ પાટણ ભારતવર્ષની એક મોટી પલ્લયધાની હતી, અને વિશ્વ અને ધાર્મિક હલનનું એક મોટું પ્રવર્તકેત્ર હતું. ભાવ બુદ્ધસ્પર્ષિત આ પવિત્ર મંદિરના મુખ્યાધિશારી તરીકે ચાલુ હતા.

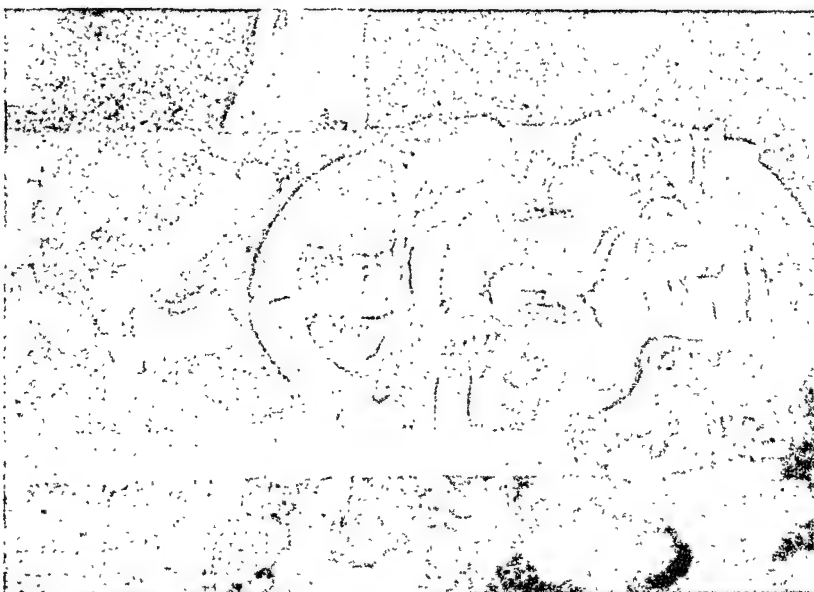
પોતાની અપુત્રાવસ્થા નિવારવા વૃદ્ધાવસ્થામાં સિદ્ધરાજ જયસિંહ વરદાન પ્રાપ્ત કરવા સોમનાથની યાત્રાએ ગયા હતાં.

ઈ. સ. ૧૧૪૪ માં સિદ્ધરાજ પછી કુમારપાલ રાજગાદી પર આવ્યાં; પૂજ્યપાદ ભાવ બુદ્ધસ્પર્ષિત મંદિરના જીર્ણોદ્ધાર માટે કુમારપાલ પાસે ગયા. મહારાજાએ સંમતિ આપી અને ભાવે ‘મેરપ્રસાદ’ બંધાવ્યો, અને તે “કૈલાસ પર્વત જેવો ભવ્ય” દેખાવા લાગ્યો તેણે માત્ર દેવાલયની નહીં પણ આખા નગરની પુનર્બંધણી કરી હતી. દેવાલયની ઉત્તરે અને દક્ષિણે મજબૂત દિલ્લાની દીવાલો ઉમેરી તેને વિસ્તારવામાં આવ્યું હતું. ભાવે આ દેવાલય પર અને વળી ગૌરી, ભોમેશ્વર, કપર્દી (શિવ) સિદ્ધેશ્વર અને બીજા દેવતાઓના મંદિરો પર સુવર્ણનાં શીખરો મૂક્યાં. રાજાઓને એકઠા મળવા ત્યાં રાજગૃહ બંધાવ્યું ચોખ્ખા પાણી માટે એક જળાશય પણ બંધવામાં આવ્યું. સોમનાથ દેવની સામે જ સુંદર અને મજબૂત સ્તંભવાળો મંડપ ઊભો કરવામાં આવ્યો, અને રજતની જળાધારી સાથે મણકના આકારનું દેવતાનું યોગસ્થાન બનાવ્યું. ત્રણ માણસોના જેટલી ઊંચાઈવાળી પ્રતિભાવાળું પાપમેલ્યન દેવનું મંદિર બંધવામાં આવ્યું, અને નહી સુધી જતાં પગથિયાંની એવારો બંધાવ્યા, બ્રાહ્મણોના નિવાસ માટે ઘણાં રહેઠાણો બંધ્યાં; ચણકાના મંદિર સાથે બે મોટી વાવ પણ બંધવામાં આવી હતી.

આમ આ પાંચમું મોટું દેવાલય અસ્તિત્વમાં આવ્યું. એના અવશેષોએ કાળના ધા ખચ્યા અને સંલારકાનાં આક્રમણો પાર કરી તે આટલા વર્ષ દરી રહ્યા. જીર્ણોદ્ધાર, અસ્થિર અને દૃઢિત તે ઊભું હતું ત્યારે સરદાર પટેલે એને ઉપેક્ષામાંથી ઉઠાડ્યું અને તેમણે એની પુનરુત્થાના માટે શપથ લીધા. ભારતવર્ષનાં શ્રદ્ધાસ્થા કેવાં હતાં તેની યુગેયુગે સ્પર્ષિત આપી આ દેવાલયે પોતાનું અસ્તિત્વ સાધ્યું કર્યું છે. ભારતવર્ષના ભૂલાઈ ગયેલા દુર્ભાગ્યના પ્રતીક રૂપે જ એ અભેદ છે. તથા યુગના અરણ્યોદય સાથે ફેનિક્સની માફક એની રાખમાંથી જ નવું મંદિર ઊભું થાય છે.

ગોતાના કાકા જલાહુદીનનો વિશ્વાસવાત
કરી, એનું ખૂન કરી ઈ. સ. ૧૨૯૬ માં
અલાહીદીન ખિલજ સુલતાનપદ ધારણ કરી ગાદીએ
બેઠો. ચુરત, રાંદેર અને સમુદ્ર સુધી ખૂનરેલ
અલામી અલાહીદીનનું સૈન્ય સૌરાષ્ટ્ર તરફ વળ્યું,
ધણાં નગરોનો નાશ કર્યો અને પ્રભાસ તરફ
ચાલી નીકળ્યું. સોમનાથના મંદિરનું રક્ષણ
કરવા રજપૂતોએ ધણું બળ બોધાવ્યું અને
દુશ્મનો સામે તેઓ બહાદુરીથી લડ્યા. પણ
કિલ્લો પડ્યો અને મંદિરની સામે-જેના રક્ષણની
તેઓએ ફોગદની આશા રાખી હતી-બહાદુર
લડવૈયાઓ કેસરિયાં કરી લડતાંલડતાં ઢળી પડ્યા

દેવી પાર્વતી (નહું મંદિર)



દેવી પાર્વતી (નહું મંદિર)

અને તેઓ સોમનાથને શરણે ગયા. દેવાલય
દુશ્મનોના હાથમાં આવી પડ્યું. અલદખાંઓ
મંદિર તોડી પડ્યું, મૂર્તિને લાંગળી હુકડેહુકડા કરી
નાખ્યા અને એના અવશેષો એ દિલ્લી લઈ ગયો.

અલાહીદીનના સંરદારે દેવાલયનો વિનાશ
કર્યો અને સોમનાથની મૂર્તિ લાંગળી, પડી તરત જ
જૂનાગઢના ચૂડાસેન રાજા મહીપાલ એનો પુનરુદ્ધાર



કર્યાઓ. આશરે ઇ. સ. ૧૩૨૫ અને ૧૩૫૬ ના સમયના ગાળામાં એના પુત્ર જોગારે વિંગની સ્થાપના કરી.

સાર પછી મદમદ યોગાઓ સોમનાથના મંદિરમાંથી વિંગ દૂર ક્યું (આશરે ઇ. સ. ૧૪૬૯) અને એને મસ્જિદમાં ફરતા નાખ્યું. પણ ક્રાઈ સમય દરમ્યાન મંદિર-ગાસાદ મસ્જિદ તરીકે વપરાયો ન હતો. સાર પછી એમ જગ્યાએ છે કે મંદિરનો પાયો ઉશ્ચિત્રે લેવામાં આવ્યો હતો, આ ઇ. સ. ૧૫૦૦ થી બહુ દૂરના સમયે હોઈ શકે એમ ન હતું.

આશરે ઇ. સ. ૧૫૭૭ માં જૂનાગઢનો કિરોલ અધ્યક્ષતા ક્રાઈ સ્થળાઓ લીધો હોય એમ લાગે છે. જતાં સોમનાથનું મંદિર તે અખાધિન રહ્યું.

યોગદાએ પાટણનો વિનાશ ક્યોં લ્યાં ક્યું તો પ્રભાસ તેની પવિત્રતા અને એના વેપાર માટે પ્રખ્યાતિ પામેલું હતું. ત્યાર પછી પ્રભાસ પાટણના બંદર તરીકેના લાભદાયક અરોબધતા ત્યાલ્યા અને સુરત એક મોટી પશ્ચિમની થઈ પડી.

ઈ. સ. ૧૭૮૩ માં ઇન્દોરનાં મહારાણી અલ્પલ્યાબીએ જૂના બંગારો દેવતાની સ્થાપના માટે અયોગ્ય ગણી, જૂના મંદિરથી થોડક દૂર નવા મંદિરની રચના કરી. વિનાશમાંથી બચાવવા ઉપરના સામાન્ય લિંગની બરાબર નીચે આ કિંગને બંદર છુપા ભૂગર્ભનાં મંદિરમાં પથરાવ્યું.

આશરે ઇ. સ. ૧૮૦૦ માં વડોદરાના ગાયકવાડના હાથમાં સૈરાપુરનું આધિપત્ય આવ્યું. ઇ. સ. ૧૮૧૧ માં જૂનાગઢનો નવાબ હમીદખાન મરુ પચ્યો અને રાજ્યની ગાદીના હક્કદાર વારસ તરીકે બધાદુરખાનની તરફેણમાં ગાયકવાડે નક્કી કરી આપ્યું હતું પણ સોમનાથના નવા મંદિરનાં કાબૂ અને અવસ્થાનો હક્ક ગાયકવાડને સોંપાયો હતો.

ઈ. સ. ૧૮૧૩ માં કલમખાંદી તરીકે જાણીની આ સુલેહ થઈ. ઇ. સ. ૧૮૨૦ સુધી કરી બદલ વિના કામગીર ત્યાલ્યા ક્યું. તથાપિ એ જ વરસમાં કાશિયાવાડનું સાવર્ભામત પ્રિટિશને સોંપાયું. આ પ્રસંગ પછી

અહર્યાબાહિના મંદિરે એની પ્રતિષ્ઠા ખોવા માંડી. અનેક વાર સુલતવી રહેલી મંત્રણાઓ અને કાશિયાવાડના પોલિટિકલ એજન્ડની મધ્યસ્થવૃત્તિદારો મેળવેલી અનુજા પછી ગાયકવાડના રાજવીએને અહર્યાબાહિના મંદિરનો જીર્ણોદ્ધાર કરવાની રજા મળી હતી. પણ પ્રસંગો ખૂબ ઝડપથી બનતા જતા હતા. જૂનાગઢનો નવાબ પાટીસ્તાનનો સ્વીકાર કરી શક્ય એટલી સારી રીતે સરકાર ચલાવવાનું શાહનવાઝ ભૂતો પર હોડી, લ્યાં ત્યાં ગયો.

ત્યારના જૂનાગઢના દિવાન શાહનવાઝ ભૂતોએ હિંદી સૈન્યને આમંત્રણ આપ્યું અને તે જૂનાગઢમાં પ્રવેશ્યું. નામદાર મહારાજા જામસાહિબ, કાકાસાહિબ ગાડગીલ અને શ્રી. સુનશી સાથે સરદાર પટેલ ઇ. સ. ૧૮૪૭ ના નવેમ્બરની ૧૨ મી તારીખે દિવાળીના દિવસે જૂનાગઢ ગયા. ત્યારે સોમનાથ મંદિરનો પુનરુદ્ધાર કરવાનો નિર્ણય લીધો અને સરદાર પટેલે નીચેના શબ્દોમાં જાહેરાત કરી :

“નવા વરસના આ મંગળ દિને અમે નક્કી કર્યું છે કે સોમનાથનો પુનરુદ્ધાર કરવો જોઈએ. તમારે-સૌના રહેઠાણીઓએ-અનનું બધું કરવું જોઈએ. આ પવિત્ર કાર્યમાં સૌએ યતિશયિત્તે કાળો ભરવો જોઈએ.”

હિંદના લોકમતની અનુમતિ સહિત નક્કી કરવામાં આવ્યું કે જીર્ણોદ્ધાર અને બંદરે અવસ્થામાં રહેલા સોમનાથના મંદિરનો જીર્ણોદ્ધાર કરવો જોઈએ, અને એની પુરાણી પ્રતિષ્ઠા પ્રમાણે એની પુનરુદ્ધાના પણ કરવી જોઈએ, અને એમાં શિવ ભગવાનની નવી મૂર્તિની પ્રતિષ્ઠા કરવી જોઈએ. સોમનાથ મંદિરના પુનર્નિર્માણ માટે ઇ. સ. ૧૮૫૦ ની ૮ મી મેએ નવાનગરના નામદાર મહારાજા જામસાહિબે એનો શિચારોપણુ વિધિ ક્યો, અને એ પછી બાંધકામના પહેલા તબક્કાનું ચાલુતર હાથ પર ધરવામાં આવ્યું. ગણુરાજ્યના રાષ્ટ્રપતિ ડૉ. રાજેન્દ્રપ્રસાદે ઇ. સ. ૧૯૫૧ ના ૧૧ મી મેએ લિંગપ્રતિષ્ઠાનો વિધિ ક્યો.

બાંધકામના છેલ્લા તબક્કાનું ચાલુતર આગળ વધી રહ્યું છે અને દેંડ સમયમાં આખા મંદિરની રચના પૂરી કરી નાખવાની આશા, સોમનાથ દ્રસ્ટના દ્રસ્ટીઓ સેવી રહ્યા છે.

નાના મંદિરના પૂર્વ દરવાજાની ઇતખા 'રાવણ ક્ષત્રી ઉચ્છિન્ન' નેત્ર દેખ.



પાટણ (પ્રભાસ) નાં તીર્થસ્થળો

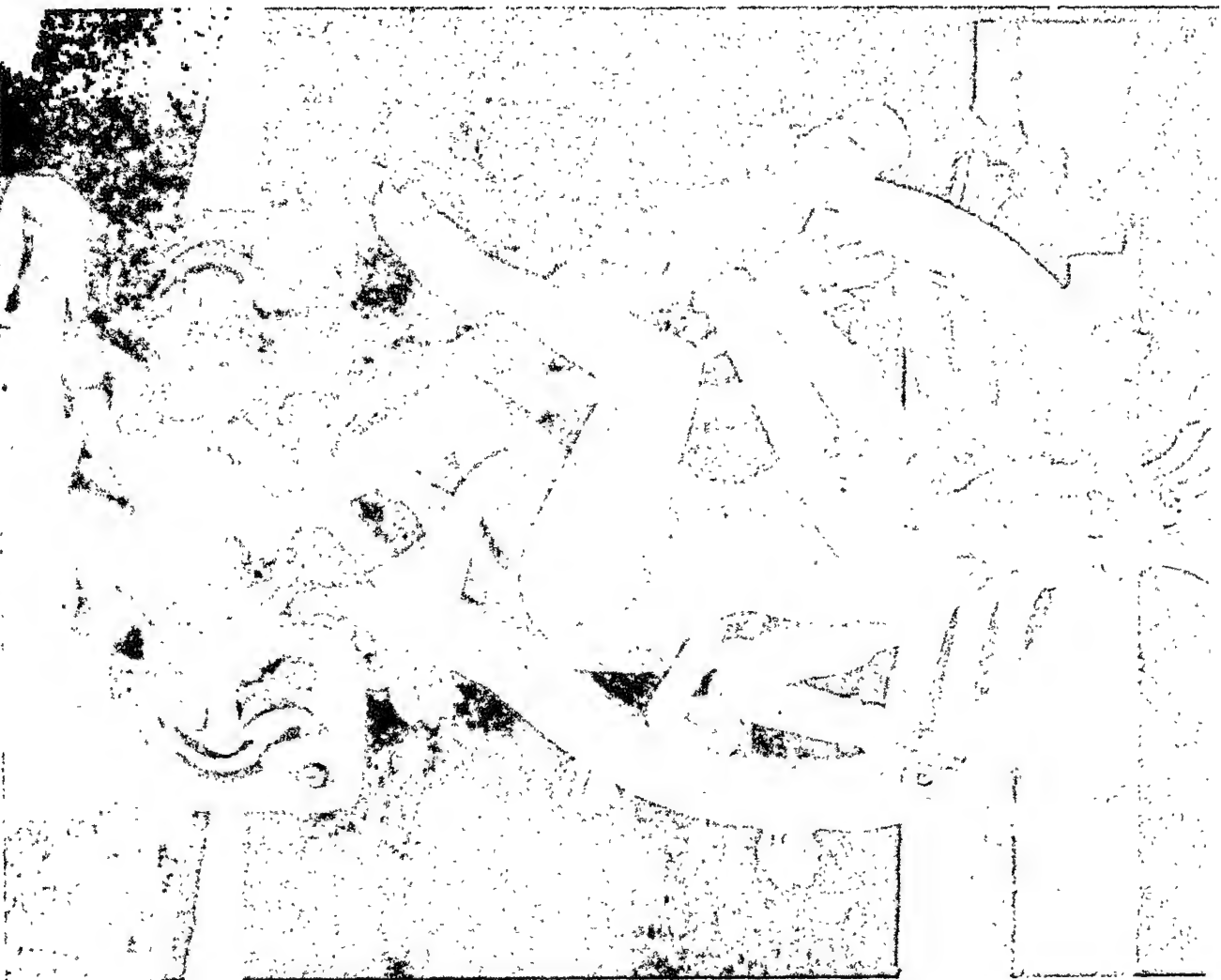
ભાલકા તીર્થ અને દેહોત્સર્ગ

વેરાવળ અને પાટણ વચ્ચે ભાલકા તીર્થ આવેલું છે. શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન આ સ્થળે જોડે વૃક્ષ નીચે વિશ્રાંતિ લેતા હતા ત્યારે, તેઓ ભીલ શિકારીના ખાણ વડે પગે ધવાયા હતા.

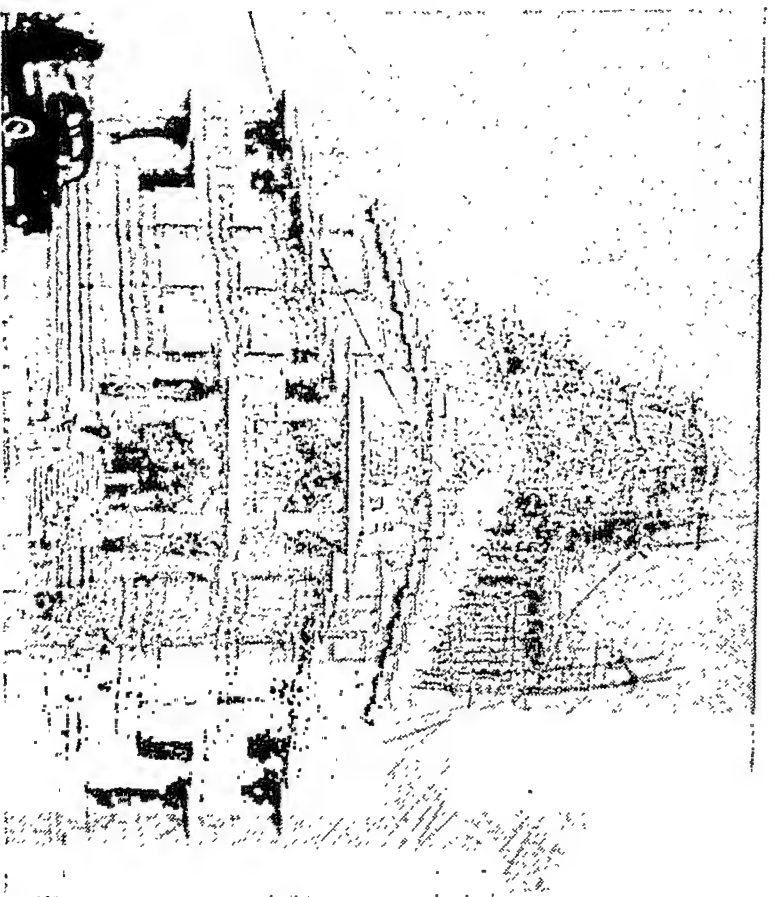
શ્રીકૃષ્ણે દારકા જોડ્યું. તેઓ પ્રભાસ આવ્યા અને લાં આ કાણલગ્નરૂઢિ ત્યાગ કર્યો. પદ્મો દારકાં ચર્યુર બન્યા, તેમણે આપસઆપસમાં ખૂનખાર કરંગ બોલ્યો અને અંદરઅંદર કપાઈ મૂક્યા. બ્રહ્મા, વિષ્ણુ અને દિગ્ધ આ ત્રણેય દેવતાઓનાં સ્વરૂપતત્ત્વો અહીં વાસ કરીને રહેલાં હોવાથી શ્રીકૃષ્ણે દેહોત્સર્ગ માટે આ સ્થળની પસંદગી કરી એમ સંદેહરહિત વર્ણવે છે. આ સ્થળનું જોડેલું બહું મધ્યમ છે કે પાપી મધુબ જે અહીં મૃત્યુ પામે તે તે પણ મોક્ષ મેળવે. બરાબર જે સ્થળે શ્રીકૃષ્ણે દેહોત્સર્ગ કર્યો હતો, એ જગા 'ભદ્રલ તીર્થ' કે 'ભાલકા' ને નામે ઓળખાય છે. વેરાવળ અને પાટણની વચ્ચે ઈશાન ખાડુઓ આ સ્થળ આવેલું છે. ત્યારે શ્રીકૃષ્ણ વૃક્ષ નીચે વિશ્રામ લેતા હતા, ત્યારે જ નામના શિકારીઓ તેમને હરણુ નાની પગમાં ખાણ નાણું અને ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ યોગસમાધિમાં પોલી ગયા. આ મ વિદ્યુતના પૂર્ણાકત ર શ્રીકૃષ્ણે પોતાનું કાપ સમાપન કર્યું, આ મરત્ત હવતમાંથી પોતાના લીલા સંકેતો લીધા, અને આ સ્થળે સાંકત દિવ્યતામાં



નવા મંદિરમાં નગરાનગી પ્રતિમા



ઉલ્લા મળલા સુધી પહોંચેલ નવા મંદિરનું દૃશ્ય



પ્રવેશ થયો. ચાંદ્રમાસની દ્વાદશીએ જે ભાલકા કુંડમાં સ્નાન કરે છે તે ખૂબ પુણ્ય મેળવે છે. શ્રીકૃષ્ણ ભાલકાતીર્થ આગળ દેહલાગ થયો હતો; પણ તેમનો અંતિમ અગ્નિસંસ્કાર ત્રિવેણી આગળ થયો હતો, અને તે ‘દેહોત્સર્ગ’ તરીકે ઓળખાય છે. હિરણ્ય નદીના કાંઠે આ જગા આવેલી છે.

શ્રી અહલ્યાબાઈનું શિવ ભગવાનનું મંદિર :

ઇન્દોરના હાલકરનાં મહારાણી અહલ્યાબાઈએ સોમપુરના કિલ્લામાં સોમનાથ દેવનું નવું મંદિર બંધાવ્યું હતું. મૂળ દેવાલયથી તે થોડે દૂર છે. આ મંદિર ભૂગર્ભમાં છે; ઇ. સ. ૧૭૮૩ માં અક્ષય તૃતીયાએ એનું ખાતમુહૂર્ત કરવામાં આવ્યું હતું અને ઇ. સ. ૧૭૮૮ માં—જ્યેષ્ઠ માસમાં આ પ્રતિષ્ઠાપન વિધિ કરવામાં આવ્યો હતો. ઉપરના ભાગમાં અહલ્યાવારા :

નવા મંદિરની ઉત્તર અને દક્ષિણ બાજુના દરવાજાની ધલમાંડું શેતરંજામ

મહાદેવ છે. જૂનાગઢના નવાબના શાસન દરમ્યાન પણ પૂજના હર્ર અને એનો કારભાર વડોદરાના ગાયકવાડના હાથમાં હતા.

પાટણનો ત્રિવેણી ઘાટ :

જે સ્થળે શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન બાણ વડે ધવાયા હતા એ સ્થળ “ભલકાતીર્થ” કે “ભાલકા” ને નામે ઓળખાય છે. પણ અરબીસમુદ્રને મળતી આ ત્રણ નદીઓ—હિરણ્ય, સરસ્વતી અને કપિલા—ના ત્રિવેણી સંગમ આગળ અગ્નિસંસ્કાર કરવામાં આવ્યો હતો. આ ત્રિવેણી ઉપર ઘાટ અને પીપળાનાં વૃક્ષોનો સમૂહ છે. આ જગા પણ ‘દેહોત્સર્ગ’ તરીકે ઓળખાય છે. જેમ સોમનાથ શૈવોનું તીર્થધામ, તેમ સોમનાથ પાસેની આ જગા બંધા હિંદુઓ અને તેમણે ખાસ કરીને વૈષ્ણવોનું તીર્થધામ છે. કારણકે શ્રીકૃષ્ણ પોતાના જીવનના અંતિમ દિવસો અહીં ગાળ્યા હતા અને આ ભાગમાં પોતાના ક્ષણભંગુર દેહનો ત્યાગ થયો હતો.

બળદેવજીની ગુફા :

શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનના મોટાભાઈ શ્રી બળદેવજી અહીં પાતાળમાં ગયા હતા. આ જગા દેહોત્સર્ગના ભાગમાં આવેલી છે.

શશિભૂષણ મહાદેવનું મંદિર :

વેરાવળથી પાટણ જતાં રસ્તામાં જમણી બાજુએ શશિભૂષણ મહાદેવનું મંદિર આવે છે. એમ કહેવાય છે કે ચંદ્રે-સોમે પોતાનાં શાપ નિવારણાર્થે આવા સ્થળે યજ્ઞ કર્યો હતો. વળી એમ પણ કહેવામાં આવે છે કે જરે શિશરીએ આ સ્થળેથી શ્રીકૃષ્ણને બાણ માર્યું હતું. નજીકમાં ‘ભીરભંજન ગણપતિ’ મંદિર છે અને તે ‘ભીરિયા’ને નામે ઓળખાય છે.

મહાપ્રભુજીની જોડક :

ત્રિવેણીજો, દેશાત્સર્ગ તીર્થ આગળ વૈષ્ણવાધ્યાર્થ શ્રી વરદાસાધ્યાર્થ શ્રીમદ્ ભાગવતનું સાત દિવસ મુધવી 'પુરશ્ચરણ' કર્યું હતું. શ્રી વરદાસાધ્યાર્થ મહાપ્રભુજીના મુદિતમાર્ગે અનુસાર જ્યાં શ્રી મહાપ્રભુજીએ ભાગવત પારાપણુ કર્યું હતું એવી આગળ વિદુત્તાનમાં પથરાયેલી આગી ૯૪ જગાંઓ છે. સ્વાભાવિક રીતે જ આવા પારાપણુ માટે શ્રી વરદાસાધ્યાર્થજીએ દેશાત્સર્ગના પવિત્રધામ વાળી જ જગા પસંદ કરી હતી તેથી આ જગા શ્રીમહાપ્રભુજીની જોડક તરીકે પાવનકારી મનાય છે.

રુદ્રેશ્વર મહાદેવ અપને સૂર્યમંદિર :

શ્રી હોમાનાથ મંદિરથી દેશાત્સર્ગ જતાં રસ્તામાં આ જો દેવાક્યો આવે છે.

મહાપ્રભુજીનું મંદિર :

ત્રિવેણીસંગમ આગળ 'દેશાત્સર્ગ' વાળી અગ્નિચંદ્રકારની જગા પાસે આ મંદિર આવેલું છે.

વેલુશ્વર મહાદેવનું મંદિર :

વડ દીકારની દીકરી અર્ધા પૂજન કરતી અપને મહાદેવમાં જ સમાઈ ગઈ હતી.

દેવપ્રચુદન :

(પાટણ શહેરમાં) વિશ્વ ભગવાનની પ્રતિમા છે; ઇ. સ. ની સાતમી સદીની આ મૂર્તિ મનાય છે.



નવા મંદિરનો જોડ નકશી કરવલો

મહાપ્રભુ મંદિર :

પાટણમાં અર્ધક્યાળાઈના મંદિરની પાસે આવેલું છે.

પાટણ (પ્રભાસ) ની

આસપાસનાં તીર્થસ્થળો

પ્રાચી :

વેરાવળ બનાતે રસ્તે આ સ્થળ પાટણ (પ્રભાસ) થી ૧૩ માઈલ દૂર છે, જ્યાં 'સોશ પીપળો' પણુ છે. પ્રભાસ પાટણમાં ત્રિવેણીસંગમે ધામિર્ક વિધિ પતાવ્યા પછી આ પીપળાની આસપાસ જળ સિદ્ધનં કરી પ્રદક્ષિણા કરવા પાનાળુઓ જાય છે. સરસ્વતીને કાંઠે શ્રી માધવરાયની પ્રતિમા પણ છે.

રેલ્વે માર્ગ

પાટણ (અભાસ) આવવા માટે છેલ્લનું સ્ટેશન વેરાવળ છે. એ વેસ્ટર્ન રેલ્વે જોનમાં આવેલું છે. મુંબઈ તરફના સુસાફરો અમદાવાદ, ધોળકા, ધોલા, જેતલસર અને જૂનાગઢ થઈને સોમનાથ મેલમાં વેરાવળ આવી શકે. આ મેલ લગભગ બપોરના સવા વાગ્યે ત્યાં આવી પહોંચે છે. વીરમગામ, જેતલસર અને જૂનાગઢ થઈને પણ તેઓ અહીં આવી શકે છે.

દિલ્હી તરફના સુસાફરો મહિસાણા, વીરમગામ, રાજકોટ, જેતલસર અને જૂનાગઢ થઈને આવી શકે છે.

રેલ્વે, દરિયાઈ અને હવાઈ માર્ગો માટેની માહિતી

દરિયાઈ માર્ગ સમ્રાટમાં એક વાર મુંબઈથી વેરાવળ ગુરુવારે એક પોટ આવી પહોંચે છે. અને દરેક રવિવારે વેરાવળ બંદરથી મુંબઈ માટે એક પોટ ઊપડે છે. આ માર્ગ સોમાસામાં બંધ રહે છે.

હવાઈ માર્ગ સોમવાર, બુધવાર અને શુક્રવારના દિવસોએ મુંબઈથી ડેશાદનો વિમાન બલહાર ચાલુ હોય છે.

વાહનવ્યવસ્થા વેરાવળ સ્ટેશને, શહેરમાં તેમજ અભાસ પાટણ માં ઘોડાવાળા ટાંગાઓ મળે છે. સૌરાષ્ટ્ર સરકારનું

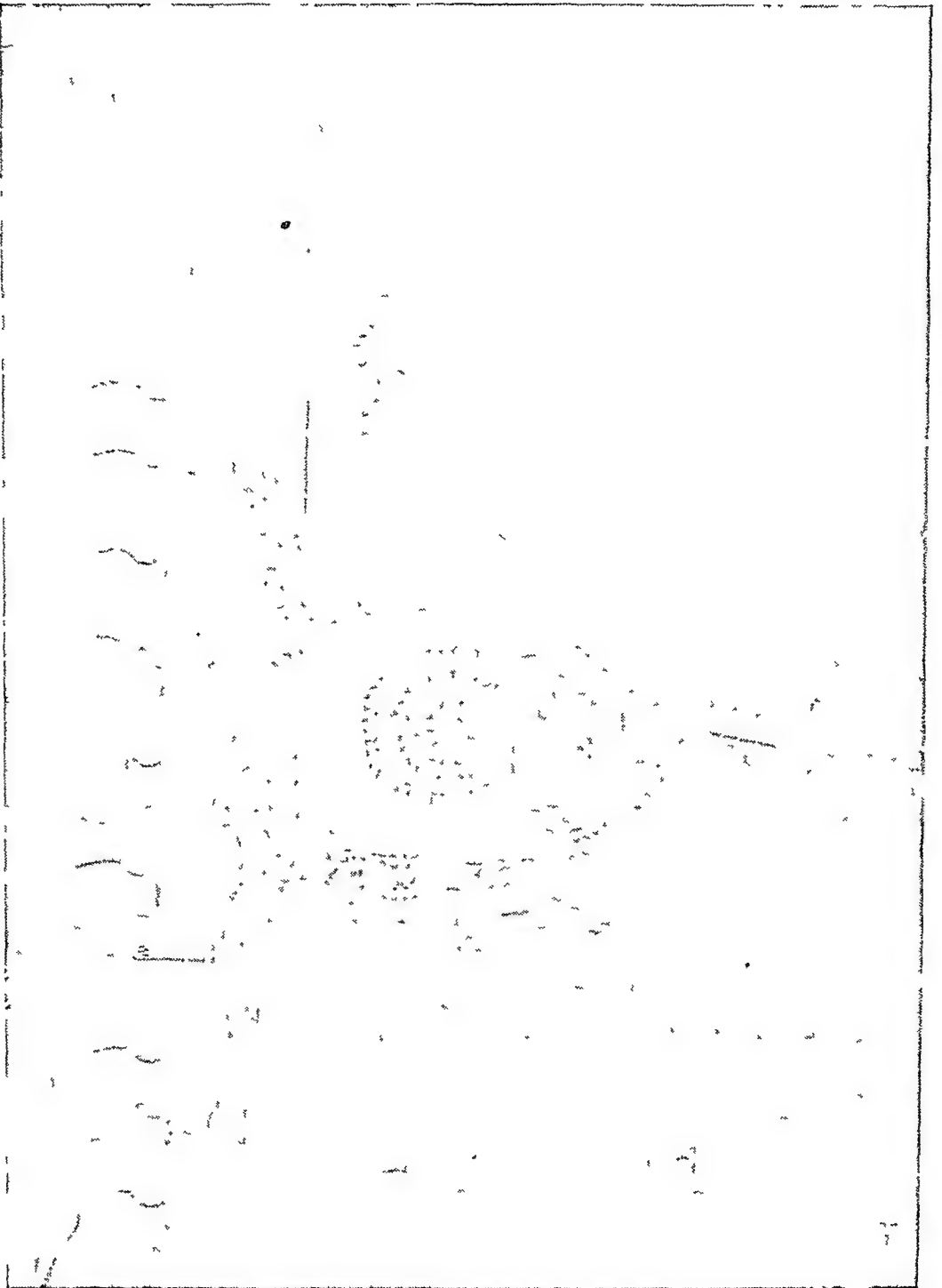
વાહનવ્યવહાર ખાતું વેરાવળથી પાટણની એક બસ ઊપડે છે; જોનો સમય સવારના ૮ થી સાંજના ૬ સુધીનો છે. વેરાવળમાં પાટણ દરવાજા આગળ બસ સ્ટેન્ડ છે. ત્યાંથી પાટણ માટેની બસ ઊપડે છે. વેરાવળ સ્ટેશનથી પાટણનું અંતર લગભગ ત્રણ માઈલ જેટલું છે.

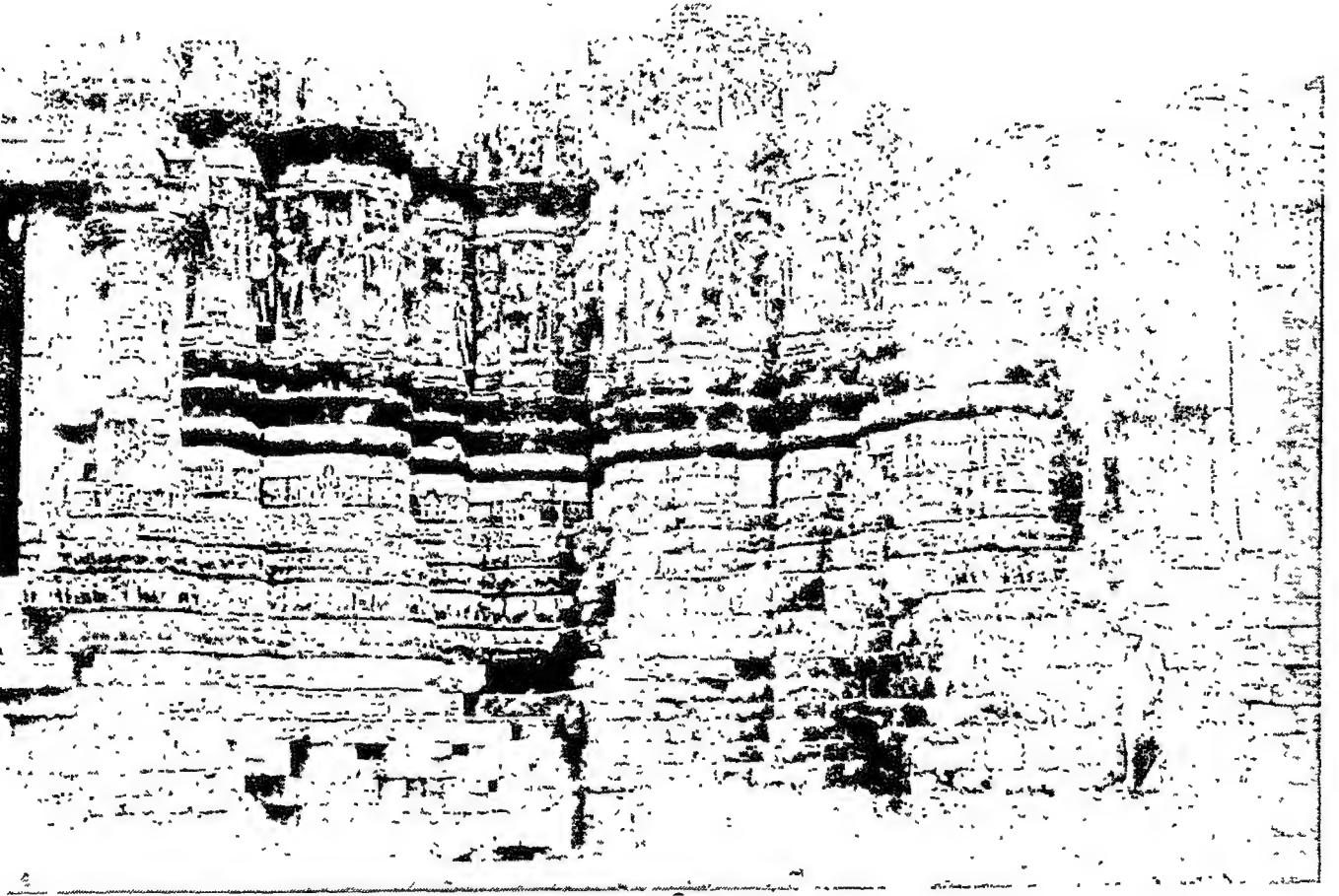
વેરાવળ અને પાટણ (અભાસ) માં ઉતરવા માટેની જગાઓ વેરાવળ શ્રી રામ ધર્મશાળા, રેલ્વે સ્ટેશનથી પાટણ (અભાસ) ૧. શ્રી લાલિયા ધર્મશાળા. ૨. શ્રી કંસારા ધર્મશાળા (ગોવર્ધન ભુવન તરીકે જાણખાય છે.)

જમવા રહેવાની સગવડવાળાં સ્થળો વેરાવળમાં આશરે ચારપાંચ પોર્ટિંગ હાઉસ છે; પાટણમાં શ્રી સોમનાથ મંદિરની પાસે એક પોર્ટિંગ હાઉસ છે. તેમજ અભાસ પાટણ મહિલા મંડળ તરફથી મંદિરના કમ્પાઉન્ડની નજીક જ એક જોજનાલય અને ઊપહાર ગૃહ યાત્રીઓની સગવડતા માટે ચલાવાય છે.

પોસ્ટ અને ટેલિગ્રાફ ઓફિસ વેરાવળ અને પાટણમાં પોસ્ટ અને ટેલિગ્રાફ ઓફિસ છે. વેરાવળની પોસ્ટ ઓફિસમાંથી ટ્રંકકાલ ડરી શકાય છે.

छात्रना सोमनाथ मठिखं २२२

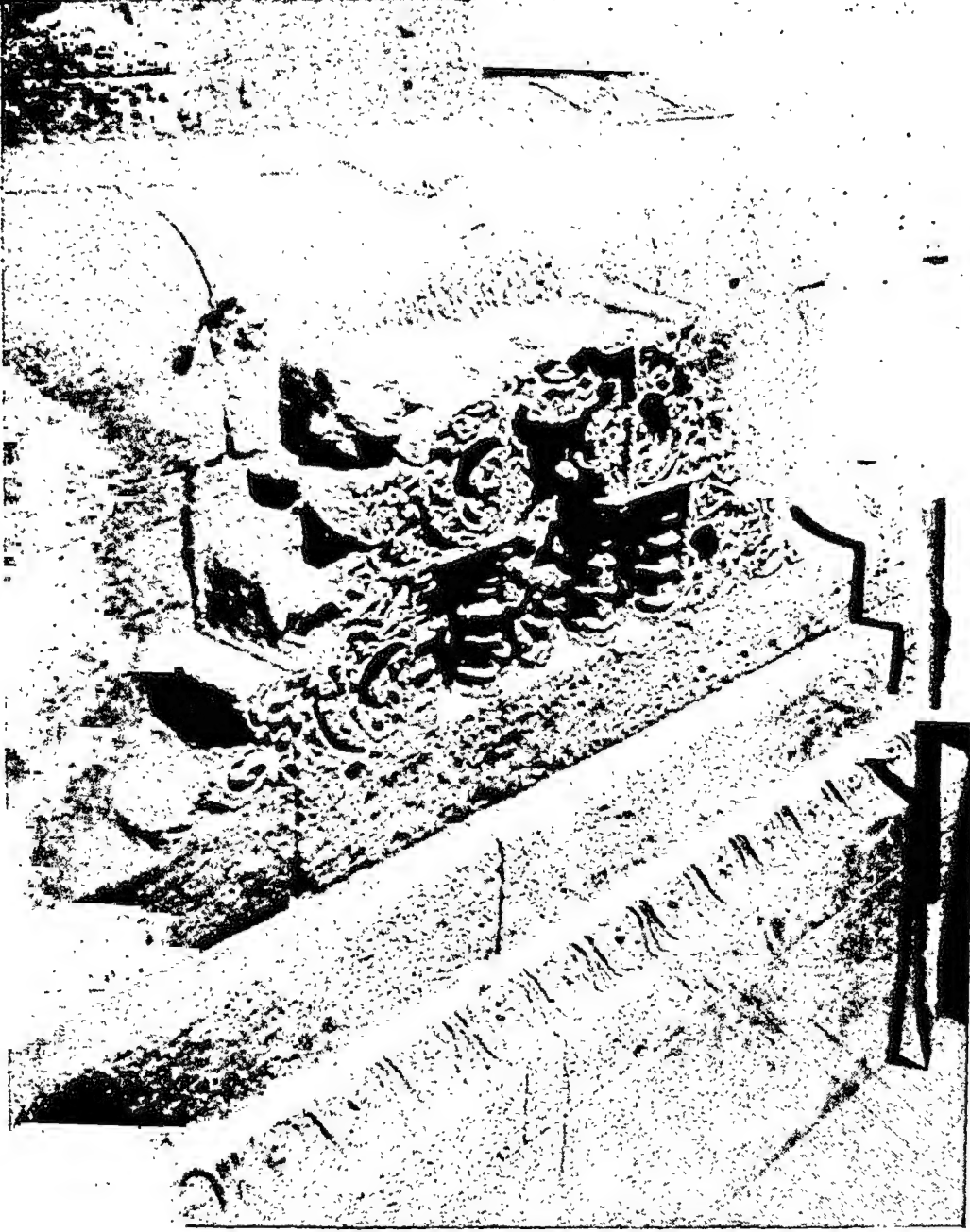




Prabhās Pātan
Somnāth

Sculpture : North
शिल्प उत्तर

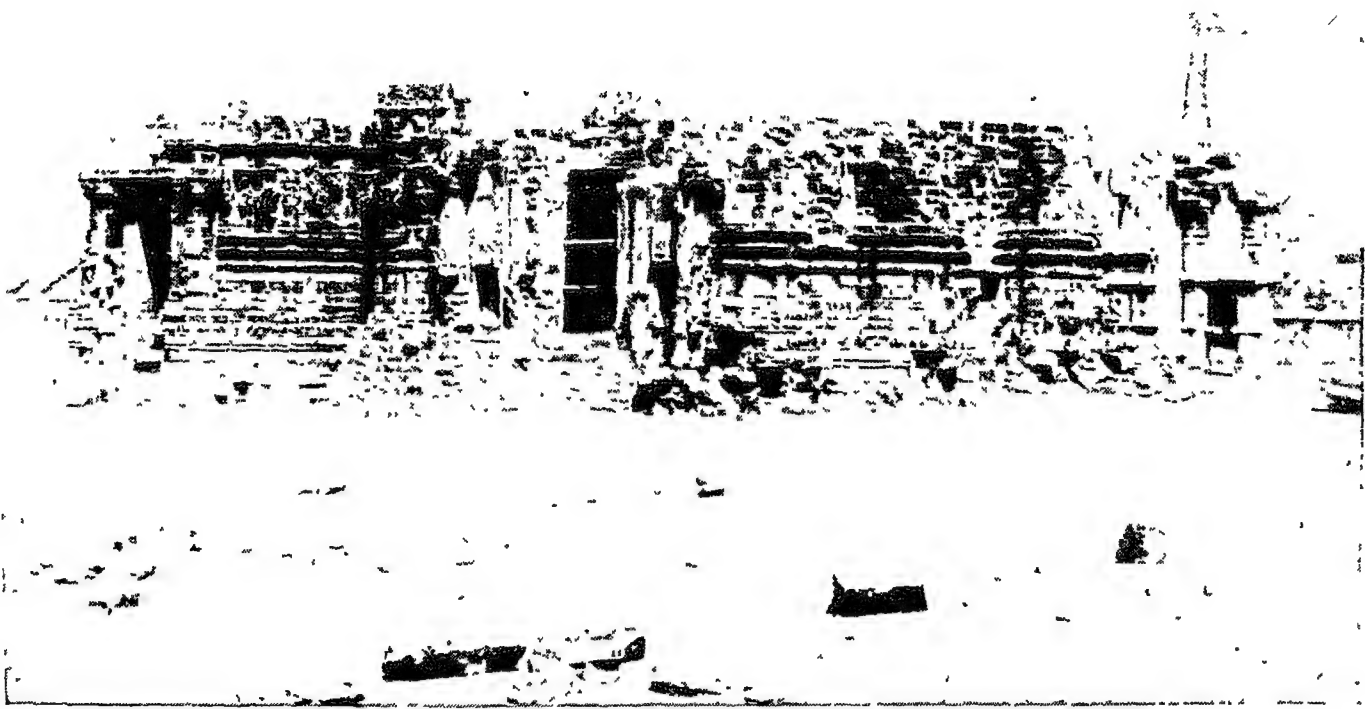
Kumarpal
1161 A.D.



Prabhās Pātan
Somnāth

Smaller Temple : West
छोटा मंदिर : पश्चिम

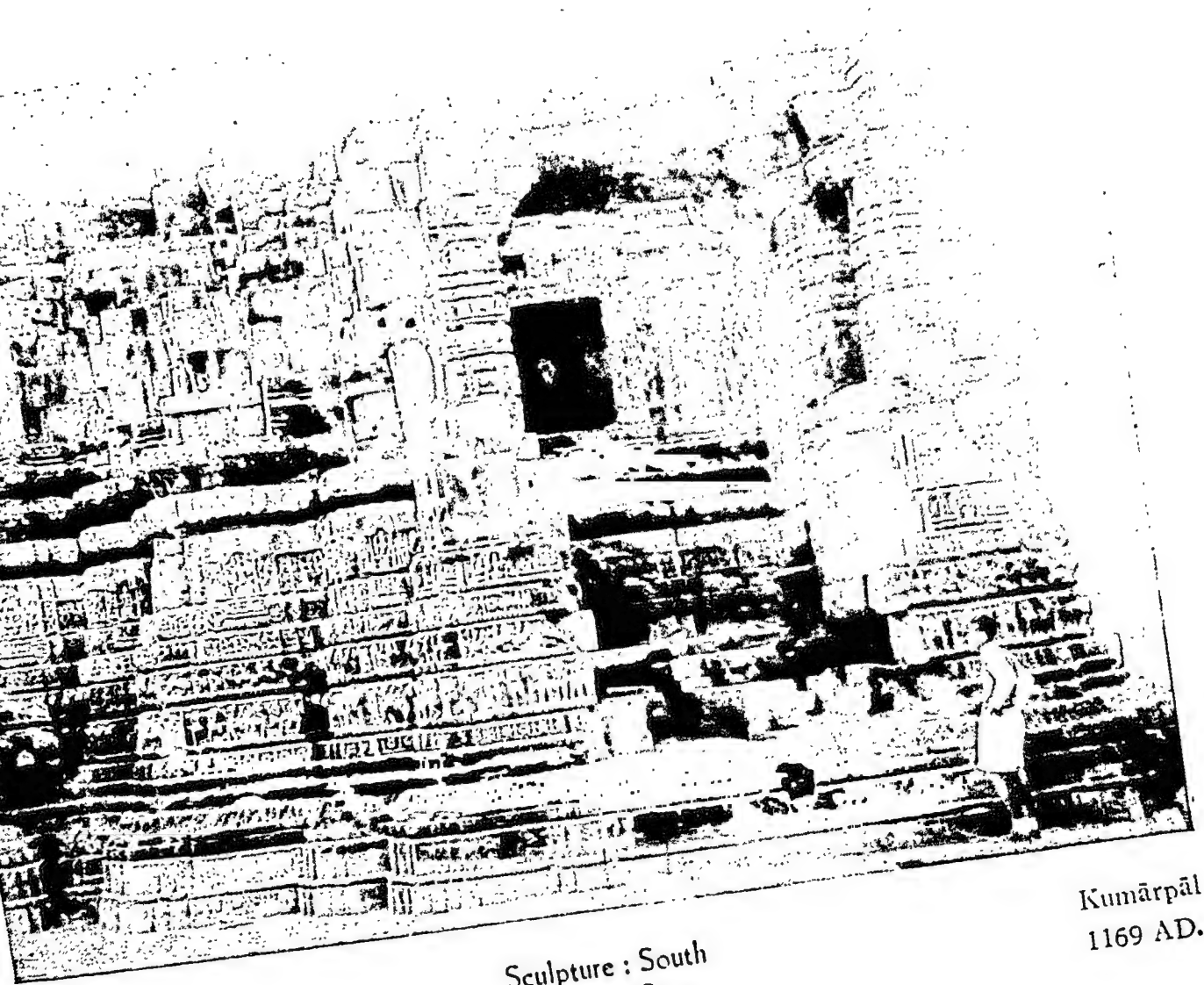
Mahipāl
1320



Prabhas Patan
Somnath

Somnath Temple : South (1920)
सोमनाथ मंदिर : दक्षिण (१९२०)

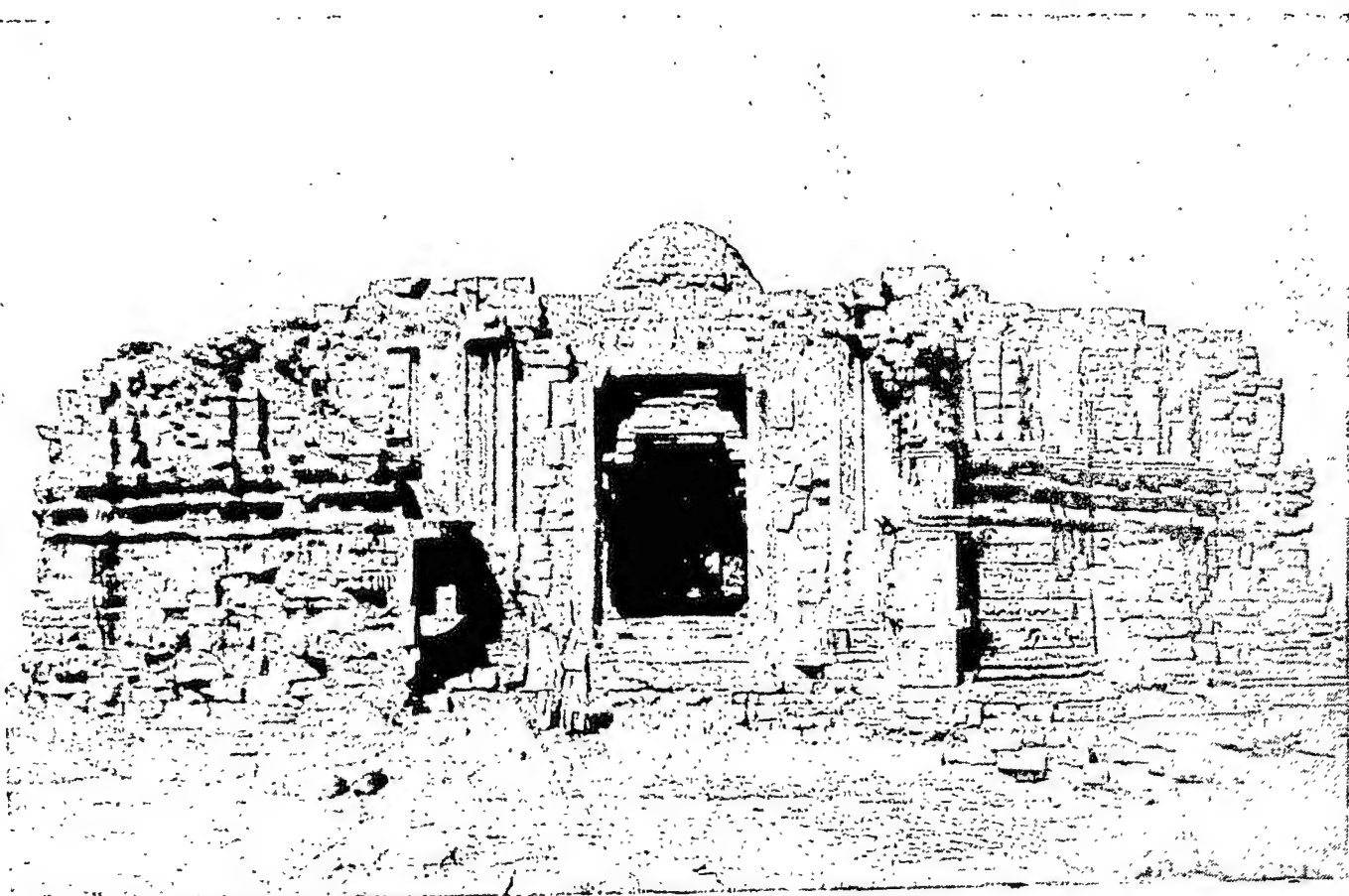
Kumarpal
1169 AD.



Prabhās Pātan
Somnāth

Sculpture : South
शिल्प : दक्षिण

Kumārpāl
1169 AD.



Prabhās Pātan
Somnāth

Sculpture : Entrance : East
शिल्प : प्रवेशद्वार : पूर्व

Kumārpāl
1169 A.D.



Prabhās Pātan
Somnāth

Natarāja : South
नटराज : दक्षिण

Kumārpāl
1169 A. D.

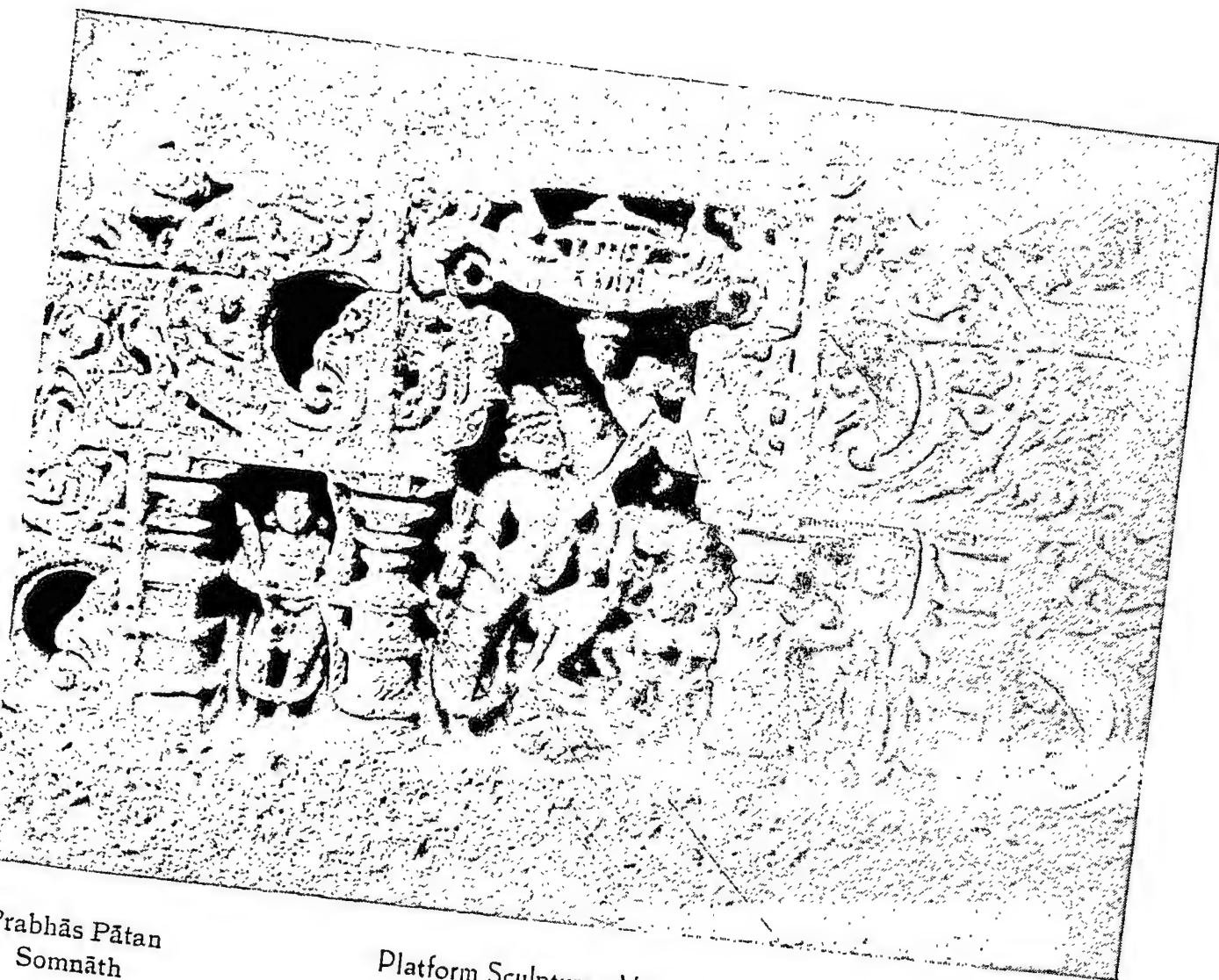


Prabhās Pātan
Somnāth

Yogi
योगी

Male Sculpture
देवमूर्त्य

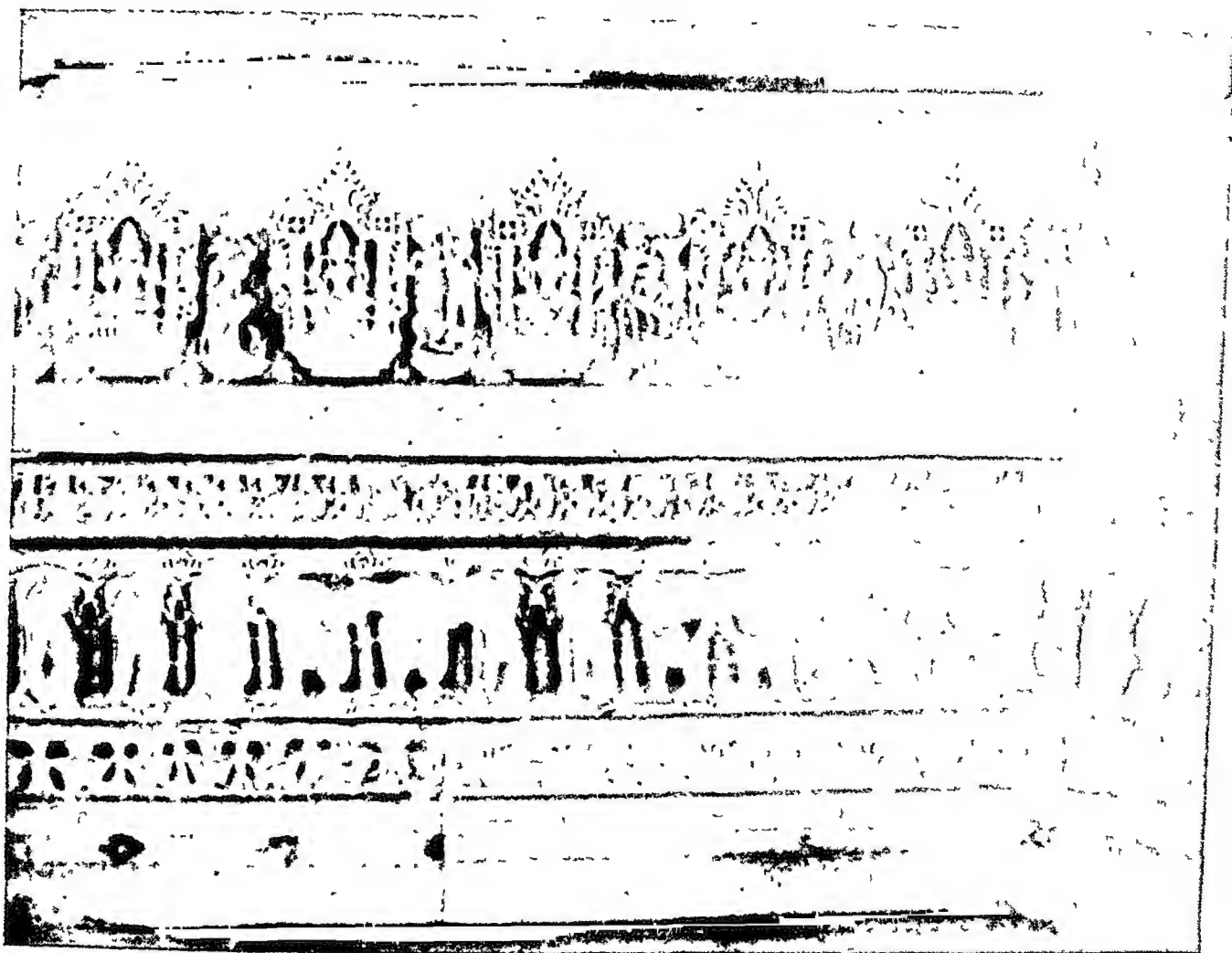
12th Cent.



Prabhās Pātan
Somnāth

Platform Sculpture : Vāman
वामनावतार

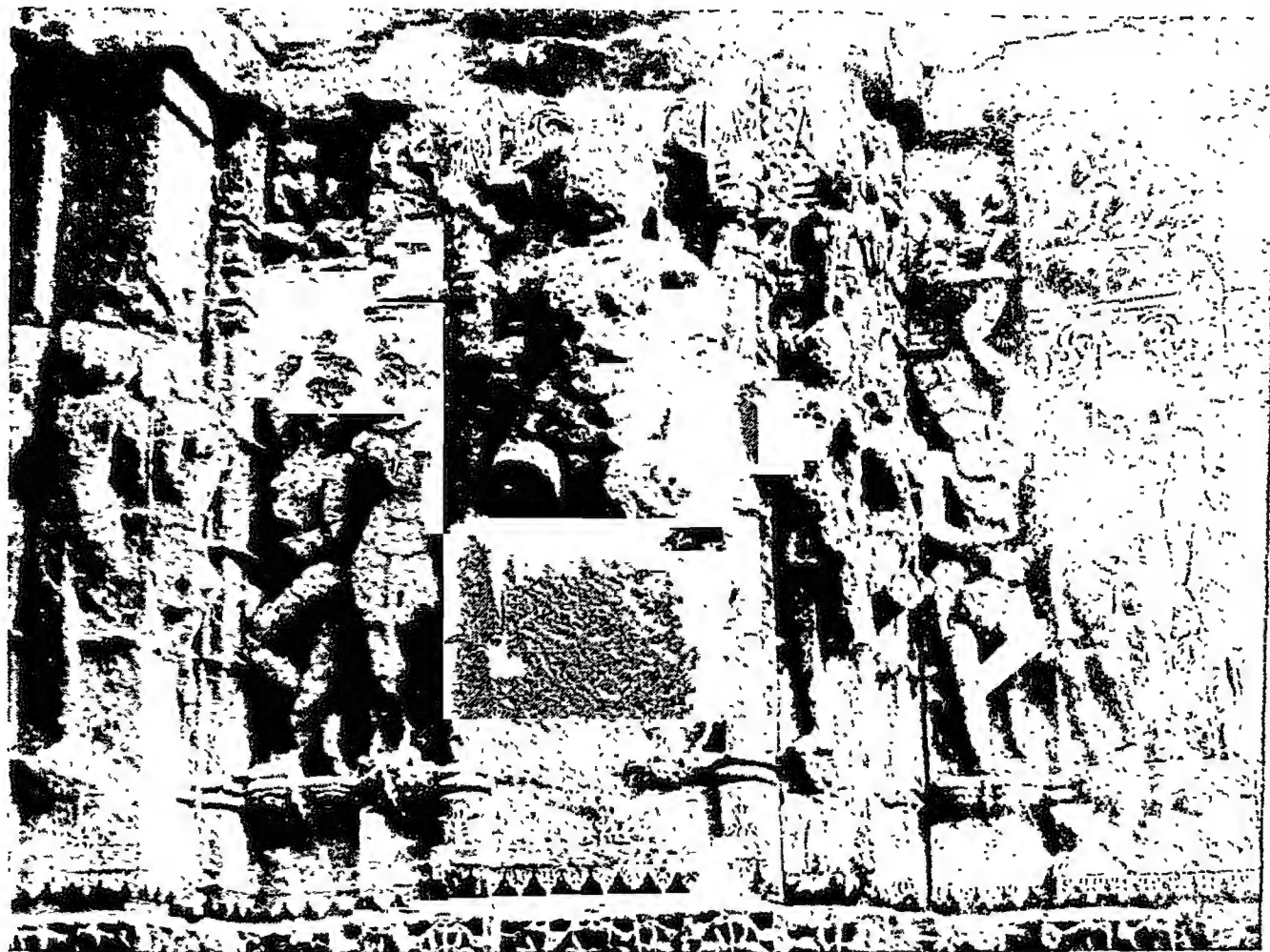
Bhimdev I
1030 A.D.



Prabhās Pātan
Somnāth

Detail of Sculpture
गजथर

Mahipāl
1320 A.D.



Prabhās Pātan
Somnāth

Panel of Gods : South
देवथर : दक्षिण

Kumārpāl
1169 A.D.



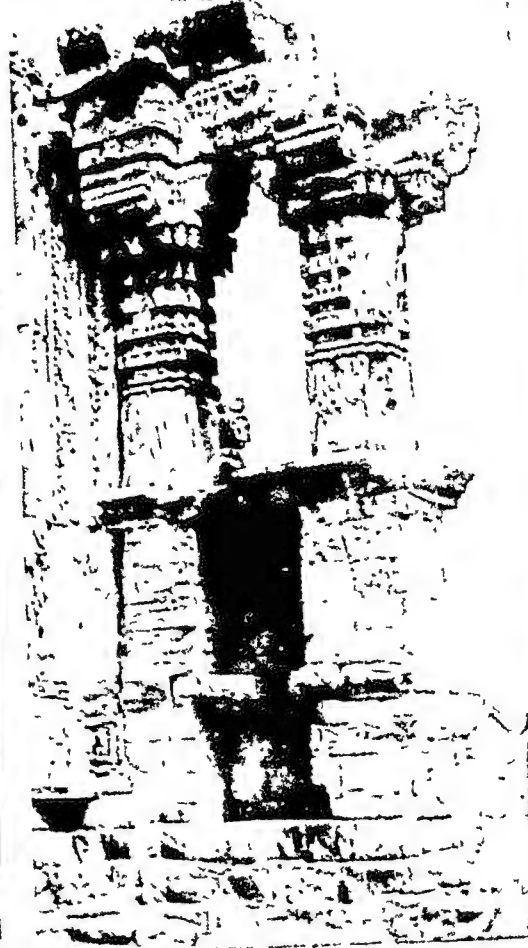
Prabhās Pātan
Somnāth

Three Outlets : Sanctum : North
३ जलमार्ग : गर्भगृह : उत्तर

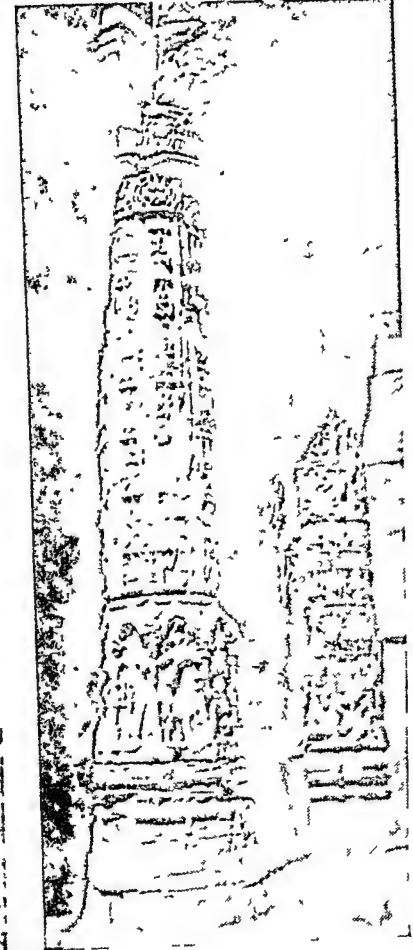
1320; 1030 &
8th Cent. A.D.



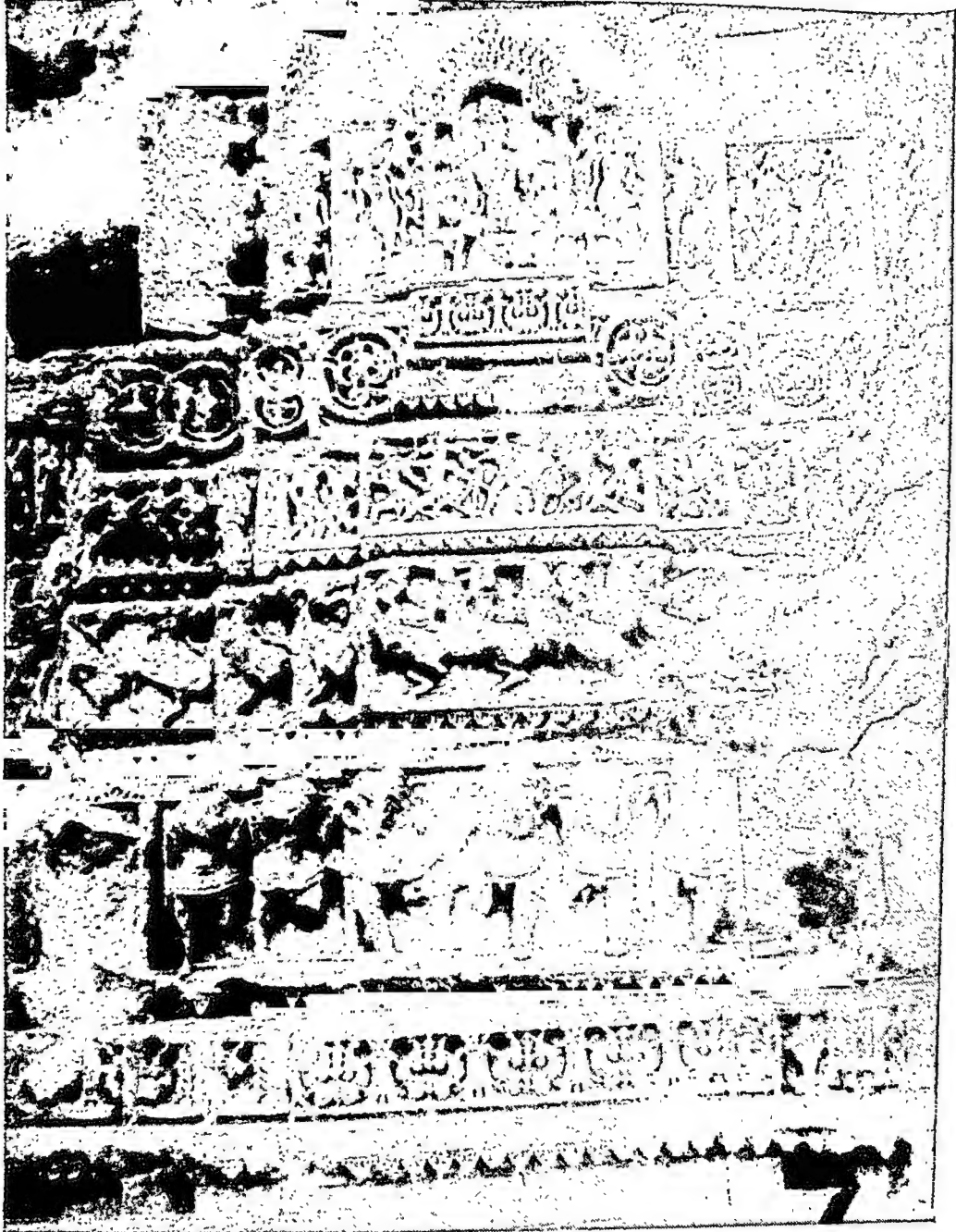
Prabhās Pātan
Somnāth



Sculpture in Pillars
स्तंभशिल्प

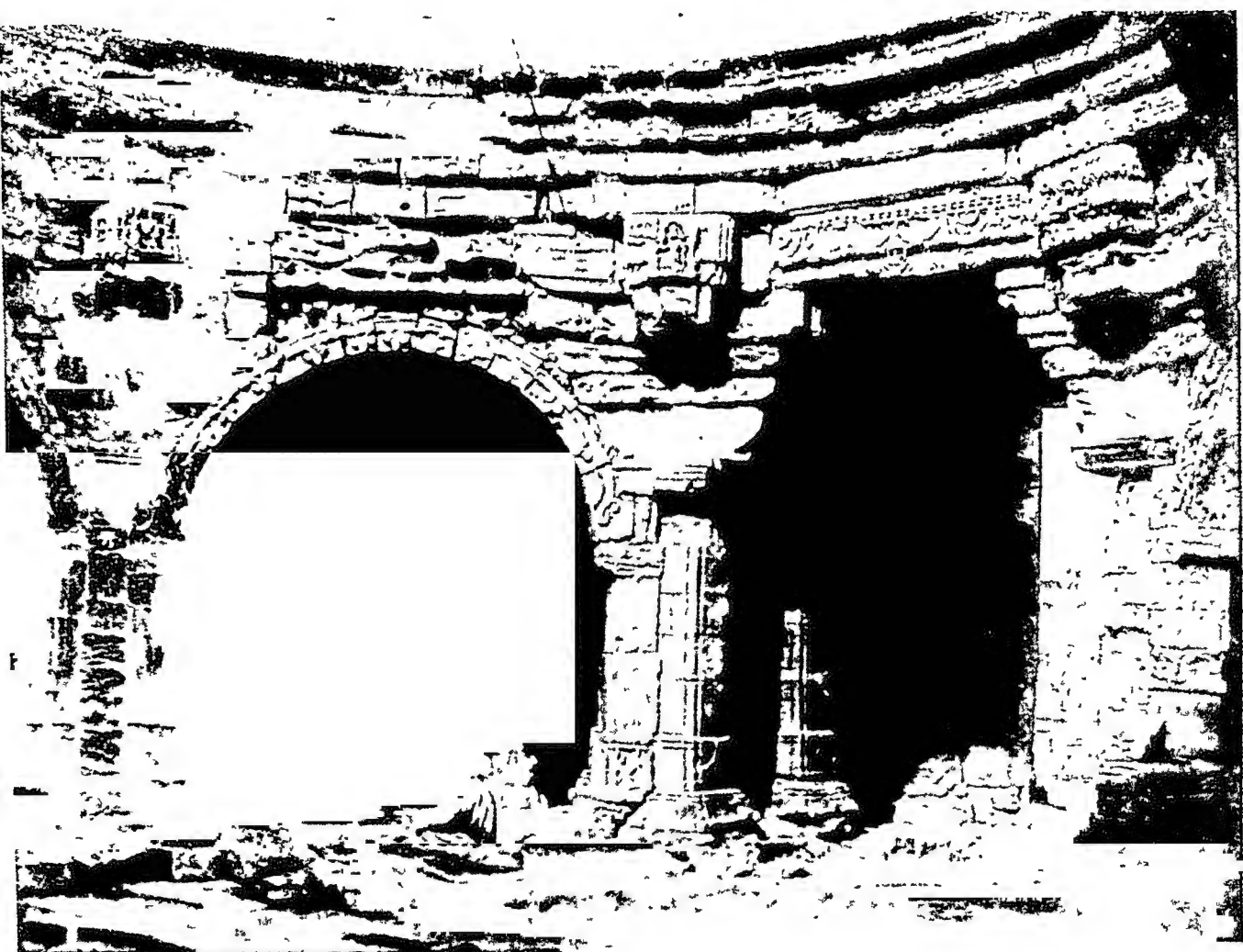


1169 A.D.
1230 A.D.



Prabhās Pātan Somnāth Elephants, Horses, Men and Gods: North
गजथर, अश्वथर, नरथर, देवथर: उत्तर

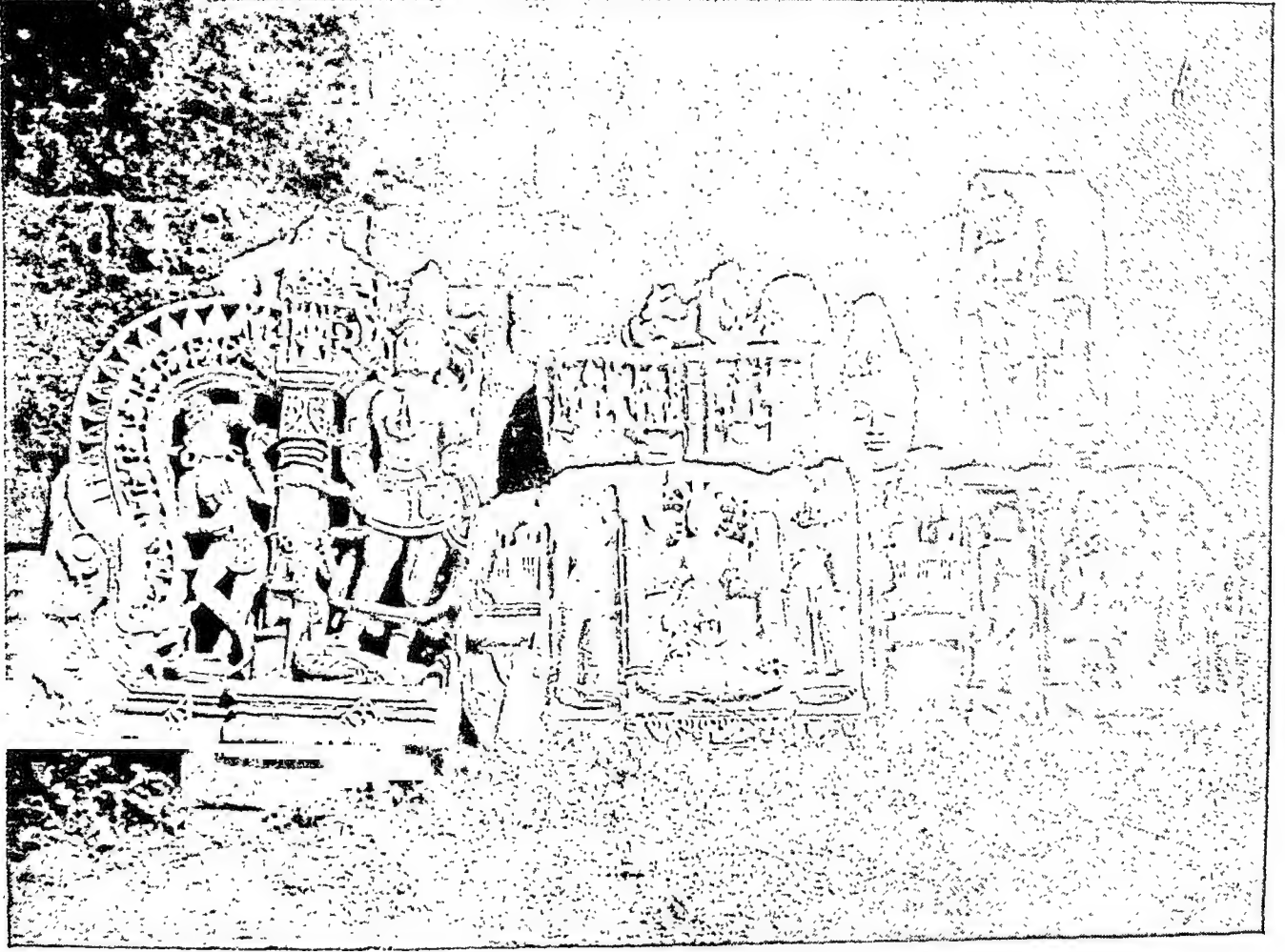
Kumārpāl
1169 AD.



Prabhās Pātan
Somnath

Arches : Hindu and Muslim
कमान : हिन्दु-मुस्लिम

12th Cent.
14th Cent.



Prabhās Pātan
Somnāth

Platform Mouldings
पुराणा शिल्पावशेष

Bhimdev I
1030 A.D. & 8th Cent.



Prabhās Pātan
Somnāth

Nataraja
नटराज

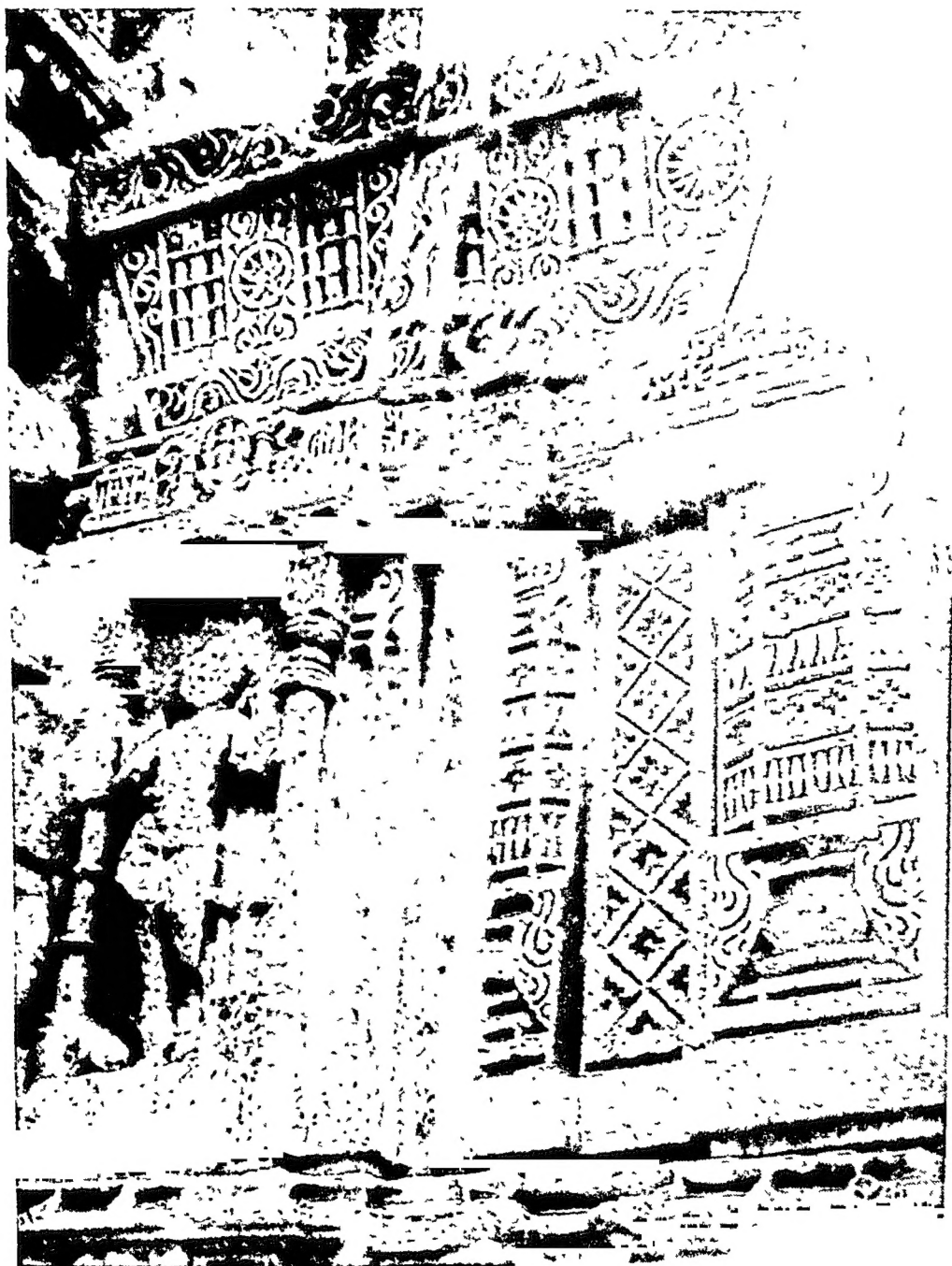
11th & 12th Cent.



Prabhās Pātan
Somnāth

Torana Piece
तोरण

11th & 12th Cent.



Prabhās Pātan
Somnāth

Portico Parapet : East
नृत्यमंडप कक्षासन : पूर्व

Bhimdev II
1230 A.D.



Prabhās Pātan
Somnāth

Shiva as Kirat
शिव : किरात स्वरूप

Kumārpāl
1169 A.D.